

वर्ष : 2024-25
अंक- प्रथम

धरा गुर्जरी



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



**कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा – II)
गुजरात, अहमदाबाद**

मोढेरा सूर्य मंदिर

मोढेरा सूर्य मंदिर गुजरात के मेहसाणा जिले के "मोढेरा" नामक गाँव में पुष्पावती नदी के किनारे प्रतिष्ठित है जो महसाणा से 25 कि.मी. और अहमदाबाद से 106 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह स्थान पाटन से 30 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यह सूर्य मंदिर भारतवर्ष में विलक्षण स्थापत्य एवम् शिल्प-कला का बेजोड़ उदाहरण है। सोलंकी वंश के राजा भीमदेव प्रथम द्वारा सन् 1026-1027 ई० में इस मंदिर का निर्माण किया गया था। वर्तमान समय में यह भारतीय पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है।

इस मंदिर परिसर के मुख्य तीन भाग हैं - गूढमण्डप (मुख्य मंदिर), सभामण्डप तथा कुण्ड (जलाशय)। इसके मण्डपों के बाहरी भाग तथा स्तम्भों पर अत्यन्त सूक्ष्म नक्काशी की गयी है।

इस सूर्य मंदिर परिसर का निर्माण एक ही समय में नहीं हुआ था। मुख्य मन्दिर, चालुक्य वंश के भीमदेव प्रथम के शासनकाल के दौरान बनाया गया था। परिसर की पश्चिमी दीवार पर, उल्टा लिखा हुआ देवनागरी लिपि में "विक्रम संवत् 1083" का एक शिलालेख है, जो 1026-1027 सीई के अनुरूप है। मंदिर राष्ट्रीय महत्व का स्मारक है और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के देखरेख में है।

धरा गुर्जरी परिवार

वर्ष:2024-25 प्रथम अंक

प्रधान संरक्षक:

श्री बिजित कुमार मुखर्जी, प्रधान महालेखाकार

संरक्षक:

श्री अभिषेक भाल, उपमहालेखाकर(प्रशासन)

संपादक मंडल:

डॉ. संदीप कुमार बाजपेई, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती बबिता , हिंदी अधिकारी

संपादकीय

हिंदी अधिकारी की कलम से

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद के कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "धरा गुर्जरी" का वर्ष 2024-25 का प्रथम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है।

धरा गुर्जरी में हिंदी की रचनाओं के माध्यम से पत्रिका को गौरवान्वित करने वाले कार्यालय के सदस्यों ने अपने स्वरचित रचनाओं, संस्मरणों, विचारों, कविताओं के माध्यम से अपने अनुभवों व अपनी सृजनशीलता को पत्रिका में समाहित किया है।

मैं संपादक एवं संरक्षक मंडल की ओर से प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) कार्यालय के सदस्यों का धन्यवाद करते हुए आशा करती हूँ कि कार्यालय के कार्मिक भविष्य में भी अधिकाधिक संख्या में उत्कृष्ट स्वरचित रचनाएँ प्रदान करते रहेंगे और इस पत्रिका को उच्चतर, पठनीय, रुचिकर और हिंदी के विकास में अग्रसर बनाने का निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

अस्वीकरण - इस अंक में सम्मिलित रचनाओं में व्यक्त विचारों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष उत्तरदायित्व स्वयं रचनाकारों का है जिन से संपादक मण्डल या कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय				i
अनुक्रमणिका				ii
क्रम	रचना का नाम	रचनाकार	विधा	पृष्ठ
1.	नियति और नीयत	श्री अभिषेक पंवार (व.ले.प.अ.)	लेख	1
2.	तू क्यों है परेशान	श्री चिंटू कुमार गुप्ता (व.ले.प.)	कविता	6
3.	यादें बीते समय की-लालटेन	श्री जयंत (लेखापरीक्षक)	लेख	7
4.	कर्म है महान-गीता ज्ञान	श्री दिपेश कुमार गुप्ता (व.ले.प.)	लेख	9
5.	मेरी बिटिया की पहली हवाई यात्रा (फ्लाइट)	श्रीमती धनवंती टिब्बानी (स.ले.प.अ.)	लेख	13
6.	क्या है जीवन !	श्री नरेन्द्र प्रताप (स.ले.प.अ.)	लेख	16
7.	सच क्या है, झूठ क्या है ?	श्री नरेन्द्र प्रताप (स.ले.प.अ.)	कविता	20
8.	कर भला तो हो भला अंत बुरे का बुरा	श्री नरेश सिंह (स.ले.प.अ.)	लेख	21
9.	शहीद का पैगाम	श्री नरेश सिंह (स.ले.प.अ.)	कविता	28
10.	चाय प्रेमी की कलम से	श्रीमती बबिता, हिंदी अधिकारी	कविता	30
11.	आधुनिक दुनिया	श्री बिनय कुमार (लेखापरीक्षक)	कविता	31
12.	भ्रष्टाचार को ना कहें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें !!	श्री बिनय कुमार (लेखापरीक्षक)	लेख	32
13.	विदाई की यात्रा	सुश्री भाविनी जीनगर, लेखापरीक्षक	लेख	35
14.	माँ का मायका	श्री मयंक मिश्रा (स.ले.प.अ.)	कविता	38

15.	आपका सच्चा मित्र कौन है ?	श्री माचवरम श्रीनिवास राव (स.पर्यवेक्षक)	लेख	40
16.	कौन सा सही है ?	श्री माचवरम श्रीनिवास राव (स.पर्यवेक्षक)	लेख	42
17.	सादगी बिना, महानता नहीं	श्री मोहित कुमार सुधांशु (स.ले.प.अ.)	लेख	47
18.	अहमदाबाद का ऐतिहासिक एलिसब्रिज (स्वामी विवेकानंद ब्रिज)	श्रीमती रीना अभ्यंकर, पर्यवेक्षक	लेख	51
19.	जल संरक्षण	श्रीमती विद्या अय्यर (पर्यवेक्षक)	लेख	55
20.	शिव	श्रीमती विद्या अय्यर (पर्यवेक्षक)	कविता	57
21.	सर्वोत्तम चाल ढूँढें	श्री हर्षित पाण्डेय (स.ले.प.अ.)	लेख	58
22.	बेहतर की तलाश में	सुश्री हेमा प्रजापति (कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)	लेख	60

प्रकाशन सहयोग

1. श्रीमती बबिता, हिंदी अधिकारी
2. श्री ललित कुमार गुप्ता, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
3. सुश्री हेमा प्रजापति, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

आवरण पृष्ठों के चित्र एवं विवरण - गुजरात टूरिज़्म से साभार

नियति और नीयत

अभिषेक पँवार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

ज़रा सोचिए कि जब आप कार्यालय में नियुक्त हुए थे, तब आप अपने कार्यालय के कार्यों के बारे में कितना जानते थे? मसलन, क्या आप जानते थे कि वन विभाग या सिंचाई विभाग आदि ऐसे किसी भी विभाग के कार्यालय की लेखापरीक्षा करने के लिए क्या जानना ज़रूरी है? किन नियमों और कायदे-कानूनों को जानना ज़रूरी है? किस प्रकार से एक जांच-सूची तैयार की जाती है? किस प्रकार प्रतिवेदन तैयार किया जाता है? अर्थात् जब नए-नए भर्ती हुए तो आप भविष्य में आपके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के बारे में कितना जानते थे? आपका तो मालूम नहीं.... मुझे तो कुछ खास अंदाजा नहीं था।

ऐसे बहुत से विषय होते हैं जिनके बारे में आपने अपनी शैक्षणिक यात्रा के दौरान ज्ञान प्राप्त नहीं किया होता। फिर यदि आप इनको पढ़ने की कोशिश करते हैं तो वे आपको बहुत ही नीरस लगते हैं। ऐसा ही हम अलग-अलग कार्यों के लिए भी कह सकते हैं। परंतु यह एक आम बात है। मेरे संदर्भ में अर्थशास्त्र, वाणिज्य और कानून ऐसे ही कुछ विषय हैं, जो मुझे नीरस लगते थे।

मेरी नौकरी लेखापरीक्षा विभाग में लगी, जहां इन विषयों से सामना होना तय था अर्थात् मेरे जीवन के संबंध में नियति को कुछ और ही मंजूर था। जैसा कि आप जानते हैं, एक नए चयनित कर्मचारी के लिए कई प्रकार के प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है, जिससे वे यह जान सकें कि उन्हें क्या करना है और कैसे करना है। मैंने प्रशिक्षण के दौरान पाया कि लोग भिन्न शैक्षणिक पृष्ठभूमि के थे अर्थात् वे अलग-अलग विषयों से स्नातक व स्नातकोत्तर उपाधियाँ लेकर कार्यालय में भर्ती हुए थे। तो फिर, ये सब एक ही तरह के कार्य करने के लिए कैसे चयनित हुए? निस्संदेह नियति के चलते ये सब एक जगह आ गए थे। हो सकता है मेरे उपरोक्त अनुभव व सोच से आप इत्तेफ़ाक न रखते हों, परंतु कुछ लोग तो जरूर इत्तेफ़ाक रखते होंगे। पर मुद्दा यह है कि

अलग-अलग ज्ञान व कौशल प्राप्त किए हुए ये लोग अपने कार्यों को ठीक से कैसे करेंगे? ऐसी कौन सी चीज़ है जो उन्हें कार्यों को सही ढंग से करने के लिए प्रेरित करेगी।

जब एक नया चयनित कर्मचारी कार्य शुरू करता है तब उसे कार्यालयीन कार्यों के बारे में ज़्यादा कुछ पता नहीं होता। फिर कुछ समय बाद हम पाते हैं कि कुछ लोग अच्छा काम करने लगते हैं और कुछ नहीं। एक कर्मचारी जिसने किसी दूसरे से अच्छे अंक प्राप्त किए हैं या अच्छी रैंक या दर्जा पाया है, वह अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पा रहा है। अब यह बात सोचने वाली है कि ऐसा क्यों हो रहा है? ऐसा हो सकता है कि जो लोग अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं, उसमें एक तो वो लोग हो सकते हैं जो किसी अन्य प्रतियोगिता की तैयारी कर रहे हों परंतु समय बीत जाने पर जब नियति ने उनके लिए ये तय कर दिया कि वे इसी कार्यालय में रहने वाले हैं तब उनका प्रदर्शन ठीक हो गया, मतलब फोकस का मुद्दा हो सकता है। परंतु इसके अतिरिक्त भी एक वर्ग ऐसा जरूर देखने को मिलता है जिसके प्रदर्शन में अच्छा खासा समय बीत जाने के बाद भी सुधार नहीं हुआ। अब ये बात सोचने वाली है कि जो लोग लाखों लोगों को प्रतियोगिता में पछाड़ कर चयनित हुए हैं, उनके ज्ञान-कौशल में कोई कमी हो यह मानना थोड़ा मुश्किल है। तो क्या वजह है प्रदर्शन में या कार्य की गुणवत्ता में अंतर होने का? मेरा मानना है यह अंतर है नीयत का, काम करने के इरादे का।

आजकल अधिकतर कार्यालयीन कार्यों को करने के लिए भिन्न-भिन्न कम्प्यूटर/ इंटरनेट आधारित एप्लिकेशन्स का उपयोग बहुत बढ़ गया है और ऐसे में कुछ बड़ी उम्र के कर्मचारियों को दिक्कत भी होती है। फिर भी उनमें से कुछ अच्छी तरह से काम कर रहे हैं और कुछ नहीं। यहाँ भी सबसे बड़ा कारक या कहिए प्रेरक शक्ति, कार्य करने वाले की नीयत ही है।

ऐसा हो सकता है कि नियति के कारण लोग अलग-अलग सामाजिक, शारीरिक एवं मानसिक परिस्थितियों का सामना कर रहे हों, पर मेरा मानना है कि यदि किसी काम को करने की नीयत होगी, तो काम हो जाएगा। और कहा भी गया है – “जहाँ चाह, वहाँ राह”।

एक बार मेरे एक मित्र ने मुझसे कहा कि यदि तुम एक 3 लीटर के बर्तन में 5 लीटर पानी डालोगे तो वो बाहर ही गिरने वाला है। उनका अभिप्राय यह था कि किसी व्यक्ति को उसकी क्षमता से अधिक कार्य देने पर वह उसकी क्षमता से अधिक कार्य कैसे करेगा? परंतु मैंने ऐसे लोग देखे हैं जिनका प्रदर्शन पहले से बहुत अच्छा हो गया। मेरा मानना है कि हमें अपने द्वारा अपने ही लिए बनाई गयी सीमाओं को आगे धकेलकर उनको और बढ़ाना चाहिए, और यकीन मानिए, ऐसा मुमकिन है। इसके लिए हमें बस इरादा करना है कि इन सीमाओं के पार जाना है, इन सीमाओं को बढ़ाना है। नियति अपने हाथ में नहीं होती पर नीयत ज़रूर होती है।

नीयत या कहिए कार्य करने का इरादा आपको हर जगह, हर परिस्थिति में मदद करती है, चाहे वो कोई भी कार्य हो, कार्यालयीन, घरेलू या सामाजिक। इससे कार्य पूर्ति या कहिए लक्ष्य प्राप्ति की संभावना बढ़ जाती है, उत्पादकता में वृद्धि होती है। यह समय और संसाधनों के कुशल उपयोग को प्रोत्साहित करती है। मज़बूत इरादे बाधाओं को दूर करने और चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं। किसी कार्य को पूरा करने से संतुष्टि और उपलब्धि की भावना आती है जिससे आपका आत्मविश्वास बढ़ता है। इससे आपके कौशल, ज्ञान और क्षमताओं का विकास होता है। आप समय का बेहतर प्रबंधन सीखते हैं। आपके अंदर उन्नत निर्णय लेने की क्षमता आ जाती है। समय के साथ-साथ आपके प्रदर्शन के आधार पर आपकी विश्वसनीयता बढ़ती है। कुल मिलाकर, नीयत, जीवन और कार्य के विभिन्न पहलुओं में प्रगति के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। इसलिए नियति का काम नियति पर छोड़िए और नेक नीयत से अपने काम में लगे रहिए।

संयुक्त हिंदी पखवाडा 2024



संयुक्त हिंदी पखवाडा 2024 के समापन समारोह पर मुख्य अतिथि एवं व.उप महालेखाकार



संयुक्त हिंदी पखवाडा 2024 के समापन समारोह पर मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए निदेशक वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय



उप महालेखाकार महोदय द्वारा हिंदी में सर्वाधिक कार्य करते हुए अनुभाग के कार्मिकों को चल शील्ड प्रदान करते हुए



संयुक्त हिंदी पखवाडा 2025 में सम्मेलित हिंदी अनुभाग व कार्यालय के अन्य कार्मिक

तू क्यों है परेशान

चिन्टू एम. गुप्ता
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सुख तो धूप और छाँव की
तरह आता जाता है
दुःख तो जीवन का साथी है
तू क्यों है परेशान (II)

जब गरीब में हिम्मत नहीं
मध्यम को फुर्सत नहीं और
आमिर को जरूरत नहीं
तो समाज कैसे बदलेगा
तू क्यों है परेशान (II)

जीवन का समय कब कहाँ
ले जाए कोई नहीं जानता
तो उम्र को मत देखो
वो महज एक धोखा है
तू क्यों है परेशान (II)

अपना जीवन कितना लम्बा है
ये मायने नहीं रखता
मायने ये रखता है
कि आप इसे कैसे जीते हैं
तू क्यों है परेशान (II)

फिर से प्रयास करने से मत
घबराना क्यों कि इस बार
शून्य से नहीं अनुभव से
होगी शुरुआत
तू क्यों है परेशान (II)

यादें बीतें समय की –लालटेन

जयंत
लेखापरीक्षक

हमारी आने वाली पीढ़ियां लालटेन का नाम सुनकर शायद सोचेंगी कि यह किस प्रकार के परग्रही जीव का नाम है अथवा यह कोई पुरातन समय के बड़े विद्वान का नाम है।

किसी जमाने में लालटेन बहुत ही काम की चीज रही है। अंधेरा होने के पश्चात शायद ही कोई ऐसा मनुष्य रहा होगा जिसे इसकी जरूरत न महसूस होती होगी। कुछ लोगों की दिनचर्या का तो अभिन्न अंग रहा है यह लालटेन। सदियों से मनुष्य अलग अलग प्रारूपों में लालटेन का इस्तेमाल करता आ रहा है, या फिर अगर कहा जाये कि आग की खोज के बाद प्रकाश करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मशालें भी लालटेन का ही प्रारम्भिक रूप थी तो कतई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

एक समय था जब लालटेन का इस्तेमाल लगभग हर क्षेत्र में किया जाता था, फिर चाहे वह घरों में रोशनी करना हो या दफ्तरों में अंधेरे को दूर करना हो या फिर रेलगाड़ियों को सिग्नल देना हो अथवा रात के समय बैलगाड़ियों के लम्बे सफ़र रहे हों। लालटेन मनुष्य की जीवनचर्या का एक अभिन्न अंग रहा है। मध्य युग की शुरुआत में मध्य पूर्वी कस्बों में चोरी व अपराधों को रोकने के लिए रात को चौकीदारों को नियुक्त किया जाता था, जो गश्त लगाने के लिए लालटेन का ही इस्तेमाल करते थे।

खैर बढ़ते अविष्कारों के इस युग में समय के साथ-साथ लालटेन ने भी अपना प्रारूप बदला जैसे कि पाषाण युग में इसे टेराकोटा से बनाया जाता था, जिस पर बहुत ही बेहतरीन नक्काशी भी देखने को मिलती थी, इसके साक्ष्य हडप्पा एवं विश्व भर में खोजी गयी पुरातात्विक जगहों पर पाए गये हैं। समय के साथ 17वीं एवं 18वीं शताब्दी में जब औद्योगीकरण की बयार चली तो इसे धातु से बनाया जाने लगा। वर्तमान समय के साथ बदलते-बदलते अब लालटेन भी आधुनिक हो चला है, व इसे अब बदलते समय की तकनीकों के अनुसार सौर उर्जा चालित लालटेन एवं एल.ई.डी जैसी आधुनिक तकनीकों के अनुरूप भी ढल चुका है।

लालटेन की तरह ही इसके इंधन ने भी समय के साथ अनेकों परिवर्तन देखे हैं। पाषाण युग में जब मनुष्य के पास संसाधनों की कमी थी तब पेड़ों की वनस्पति का इस्तेमाल कर लालटेन को जलाया जाता था। समय के साथ-साथ जानवरों की चर्बी की वसा, मधुमक्खी के छत्ते की

मोम, जैतून के तेल, सरसों एवं अन्य बहुत सी चीजों के तेल से भी लालटेन को रोशन किया जाता था। इसके पश्चात् मिटटी के तेल की खोज ने जैसे लालटेन की लौ में नयी जान भर दी। और मिटटी के तेल का इस्तेमाल दशकों तक किया गया।

आज लालटेन रखने वाले उँगलियों पर गिनने को मिलेंगे। लालटेन को आज केवल सुसज्जा के लिए लगाया जाता है या फिर संग्रहालयों में प्रदर्शनियों में पाया जाता है। आज बेचारी लालटेन अपने वजूद की लड़ाई लड़ रही है। सदियों तक हम भारतवासियों को अपनी रोशनी से जगमग करने वाली लालटेन आज अपने ही देश में अपनों के बीच बेगानी सी हो चली है। किन्तु आज के आधुनिक युग में भी मनुष्य ने लालटेन को बैटरी चलित, सौर उर्जा चलित जैसी विभिन्न तकनीकों की मदद से मरणासन्न होने एवं विलुप्त होने से बचाया हुआ है। इसके लिए भले ही हमने इसका रूप परिवर्तन कर दिया हो, तकनीकों में बदलाव कर इसमें सांस फूँकी है।

तूम आये जगमग जगमग प्रकाश आया,
कभी दीपक, कभी मशाल, कभी चिराग का तुमने पाया।।
तुम आये रौशनी लाये, प्रछन्न हुआ अंधकार का साया,
कभी राहगीरों को, कभी खो चुके हुआँ को तो कभी रेलगाड़ियों को
तुमने रास्ता दिखाया।।
तुम आये आधुनिकता के युग में भी छाए,
कभी सौर उर्जा चलित, कभी बैटरी चलित, कभी रासायनिक रस्ते तुमने
भी हर युग में बनाये।।

मेरे पड़ोस में रहते हैं पंडित जी। पंडित जी, जो न तो पंडिताई करते हैं और न ही किसी पंडित के घर पैदा हुए हैं, पर फिर भी पूरा शहर और अब तो इन्टरनेट की बदौलत जाने कहाँ-कहाँ के लोग उन्हें 'पंडित जी' के नाम से जानते थे। उनका असली नाम तो बृज भूषण है। एक सरकारी नौकरी से ठीक-ठाक पेंशन लेकर रिटायर हुए हैं। घर पे एक पत्नी और 2 बेटे हैं, जो बड़े शहरों में अच्छी नौकरी करते हैं। अब सवाल ये उठता है कि सारी दुनिया और यहाँ तक कि उनकी पत्नी भी उन्हें 'पंडित जी' क्यों कहती है? इसके पीछे एक कहानी है। कहानी मतलब उनके जीवन में घटी एक सच्ची घटना भी है जो उन्होंने मेरे साथ साझा की -

बात उस दौर की है जब हमारे देश में कम्प्यूटर का दौर शुरू ही हुआ था। बड़े सरकारी कार्यालयों में कम्प्यूटर लगाए जा रहे थे, और कार्यालयों के कर्मचारियों को कम्प्यूटर चलाना सिखाये जाने के लिए ट्रेनिंग दी जा रही थी। बृजभूषण जी हमेशा से कुछ न कुछ पढ़ने और कुछ नया सीखने का शौक रखते थे। वे न सिर्फ़ लिटरेचर बल्कि धर्म-ग्रन्थ भी बड़े शौक से पढ़ते थे। उनकी पत्नी के शब्दों में कहें तो रामायण और भागवद गीता तो वो घोट कर पी गए थे। अक्सर घर और दफ्तर की महफिलों में सुन्दर शब्दों में रामचरित्र मानस की चौपाईयाँ और भागवद गीता के श्लोकों की बड़ी सरल और सुन्दर व्याख्या करते थे। अब जब कम्प्यूटर सीखने की बारी आई तो इसमें भी उन्होंने रूचि के साथ भाग लिया। पर उनके साथ के लोग न जाने क्यों बड़े बे-मन से इसमें भाग ले रहे थे। ट्रेनिंग देने वाली टीम बहार से आई थी। चार जवान लड़के जो शायद अभी-अभी पढ़ाई पूरी करके निकले थे उन्हें सिखा रहे थे। उनमें एक लड़का था जो बड़े शांत और सरल स्वभाव का था जो बड़े धैर्य के साथ इन लोगों को सिखा रहा था, और कभी भी उनके बेवकूफी भरे सवालों पर गुस्सा नहीं होता था। इस लड़के का नाम संदीप था। बृजभूषण जी को संदीप बहुत पसंद था। इधर कुछ

दिनों से बृजभूषण जी देख रहे थे कि संदीप शांत-सा रहने लगा था। उसके चेहरे पर हमेशा रहने वाली मुस्कान जैसे खो-सी गई थी। वो अक्सर कहीं खोया-सा रहता और एक अजीब-सी मायूसी उसकी आँखों में बनी रहती। बृजभूषण जी अनुभवी इंसान थे, उन्हें पता था कि अगर इस उम्र में डिप्रेशन ने घेर लिया तो ज़िंदगी खराब कर देगा। इसलिए उन्होंने संदीप से बात करने की सोची और एक दिन उसे डिनर पर घर बुलाया। संदीप आया और खाना खाने के बाद बृजभूषण जी उसे लेकर लम्बी सैर पर निकल गए। फिर बातों-बातों में उसकी परेशानी का कारण पूछा, जिसे पहले तो संदीप टालता रहा लेकिन फिर उसने अपनी परेशानी का कारण बता ही दिया।

दरअसल पिछले पांच सालों से संदीप किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहा था और लगातार मेहनत के बाद भी उसे तीसरी बार भी विफलता ही हाथ लगी थी। जिसने उसकी हिम्मत पूरी तरह से तोड़ दी थी। उसे लगने लगा था कि उसकी ज़िन्दगी के पांच साल बस यूँही बर्बाद हो गए और अब उसका कोई भविष्य नहीं होगा। इतनी मेहनत के बाद मिली विफलता ने उसे चौथे और आखिरी मौके के लिए भी मायूस कर दिया था। वो अब आगे परीक्षा की तैयारी नहीं करना चाह रहा था, और कहीं-न-कहीं अपनी विफलता के लिए खुद को ही ज़िम्मेदार मान रहा था, दोषी ठहरा रहा था कि शायद उसकी मेहनत में ही कहीं कमी रह गई थी।

ये सब सुनकर बृजभूषण जी ने तुरंत संदीप को भागवद गीता का ये श्लोक सुनाया –

*कर्म्येवाधिकर्स्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥*

“जानते हो संदीप इसका मतलब क्या है?” बृज भूषण जी बोले “ये श्लोक भगवद गीता के दूसरे अध्याय का 47वां श्लोक है। जब अर्जुन रणभूमि पर अपने सगे-संबंधी, अपरे गुरु, भाई, अपने दोस्तों को देखकर युद्ध छोड़ देना चाहते हैं, तब भगवान् उसे गीता का उपदेश देते हैं और गीता का ये श्लोक तो सम्पूर्ण गीता के सारांश जैसा-ही है

| इसका अर्थ अगर समझ लें तो जीवन की सारी परेशानियां दूर हो जाए।" संदीप ने पूछा "आखिर क्या है इस श्लोक का अर्थ ? और इसमें ऐसा क्या क्या है जो आप इसे हर परेशानी का हल बता रहे हैं ?"

बृज भूषण जी बोले " इसका अर्थ है कि, हे अर्जुन ! तेरा अधिकार कर्म करने में है, उसके फल में नहीं। तू कर्म के फल के प्रति आसक्त ना हो या कर्म ना करने के प्रति प्रेरित ना हो"

" अगर सरल भाषा में कहें तो हम में से हर कोई कुछ भी करने से पहले उस काम के परिणाम के बारे में सोचता है जैसे बच्चे पढाई शुरू करने से पहले अच्छे मार्क्स की इच्छा करते हैं, व्यवसायिकदिन के शुरुआत में ही शाम तक सम्पूर्ण सामाग्री का उपयोग हो जाने की इच्छा करता है, इंजिनियर नक्शा बनाने से पहले ही मास्टरपीस बनाने की इच्छा रखता है, एक गृहणी सब्जी काटने से पहले ही ये सोचती है कि आज का खाना खाकर तो उसका परिवार उसकी तारीफ़ करेगा। हर कोई अपने हर काम से अच्छे-से-अच्छे फल की उम्मीद करता है, जबकि हमारे हाथ में सिर्फ और सिर्फ अपना काम करना है, उसका फल क्या मिलेगा, कैसा मिलेगा, कैसे मिलेगा...उसपर ना तो हमारा नियंत्रण है और ना ही अधिकार"

ये सुनकर संदीप बोला " अगर हम फल की इच्छा ही नहीं रखेंगे तो उसकी प्रेरणा क्या होगी उस काम को करने की, ऐसे तो हम कोई भी काम सिर्फ टाइम-पास के लिए करेंगे"

इस पर बृजभूषण जी बोले " नहीं, इसका मतलब ये नहीं कि हम अपने काम में इंटरेस्ट ना लें, या अपने प्रयास में कमी रखें। इसका मतलब ये कि हम ये समझ लें कि हमारे हाथ में सिर्फ हमारा काम है। उदाहरण के तौर पे, एक बच्चे का काम पूरे साल भर अच्छे से पढाई करना है, लेकिन परीक्षा का परिणाम और भी कई बातों पर निर्भर करता है, कई बार कॉपी चेक करने वाले के मूड पर भी। ऐसे में अगर परिणाम उस बच्चे की उम्मीद से कम आ जाते हैं, तो उसे ना तो अपनी योग्यता पर शक करना है और ना ही अगली बार मेहनत में कोई कमी करनी है।

उसे हर हाल में अपना श्रेष्ठ देना है, और उसके बाद क्या होता है वो सब भगवान पे छोड़ देना है। किसान जब खेत में बीज बोता है, रात-रात भर जागकर फसलों में पानी देता है, तो वो अपना काम कर रहा है, लेकिन अगर सूखा पड़ जाए या उसकी फसल को कोई बिमारी लग जाए तो किसान को अपने आपको इसकी वजह नहीं समझना चाहिए। क्योंकि ये बात उसके नियंत्रण में नहीं थी। जीवन में बहुत कुछ ऐसा है जिस पर हमारा नियंत्रण नहीं है, पर खुद पर और अपने कर्म पर हमारा पूरा वश है। इसलिए उसमें कमी नहीं रहनी चाहिए। जब हम इस बात को समझ लेंगे तो जीवन की छोटी-बड़ी बातों में हिम्मत नहीं हारेंगे। खुद पर विश्वास रखेंगे और अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए तैयार रहेंगे।"

बृज भूषण जी की बातों का संदीप पर बहुत गहरा असर हुआ। उसने मन-ही-मन एक बार फिर परीक्षा की तैयारी करने का फैसला कर लिया था। कुछ दिन बाद जब बृज भूषण जी के कार्यालय में ट्रेनिंग पूरी हुई, और उन्हें कम्प्यूटर सिखाने वाली टीम को विदा किया जा रहा था।

तब संदीप ने सभी को इकट्ठा किया और कहा "हम सबको हमेशा कुछ-ना-कुछ सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए। शिक्षक कहीं भी और किसी भी रूप में मिल सकते हैं, और हो सकता है कि कोई ऐसा गुरु मिल जाए जो जीवन के प्रति आपका नज़रिया ही बदल दे। मुझे भी यहाँ एक गुरु मिले जिन्हें जीवन का बहुत अनुभव है और इस अनुभव को बांटना भी आता है। ये गुरु है बृज भूषण जी, जिन्हें मैं आज से 'पंडित जी' कहकर पुकारूंगा क्योंकि पंडित का अर्थ होता है ज्ञानी-ज्ञान देने वाला।"

और यही से बृज भूषण जी का नाम 'पंडित जी' पड़ गया। हमारे जीवन में भी ऐसे पंडित जी कभी टकरा जाते हैं और जीवन के प्रति हमारा नज़रिया बदल जाते हैं।

मेरी बिटिया की पहली हवाई यात्रा (फ्लाइट)

धनवंती टिब्बानी

स.ले.प.अ.

मेरी बेटी अभी ३.५ साल की है जब वह २ साल ४ महीने की थी तब हम किसी धार्मिक कार्य से दिल्ली गए थे। जाने के समय तो हमने राजधानी की टिकट बुक करायी और रेल से गए। आते समय क्योंकि हमें अगले दिन कार्यालय जाना था और निकलना भी रविवार को ही था तो वापसी की टिकट फ्लाइट से करा ली कि जल्दी पहुँच जायेंगे तो आराम करके अगले दिन कार्यालय ज्वाइन करेंगे।

क्योंकि यह मेरी बेटी के लिए पहली हवाई यात्रा थी मैं बहुत उत्साहित थी। मुझे खुशी तो बहुत थी कि मेरी नन्ही परी भी बादलों के बीच यात्रा करेगी परन्तु इसी के साथ चिंता भी थी कि उसे कैसे व्यस्त रखूंगी ताकि वो ज्यादा रोये नहीं। मैंने उसे व्यस्त रखने के लिए कई तरह के सामान अपने साथ रखे जैसे कि कलरफुल क्ले, मैजिक वाटर बुक, क्रेयॉन के पैक, डूडल बुक (यह एक सुन्दर सी किताब होती है जिसमें ४ या ८ काले श्यामपट्ट ब्लैकबोर्ड जैसे पेज होते हैं जिसपे बच्चे स्केच कलर से तरह तरह की चीजें बना कर उसे वाइप से साफ कर सकते हैं, कुछ चॉकलेट्स, बिस्कुट इत्यादि।

क्योंकि हम दोनों नौकरी करते हैं, मेरी बेटी को ऐसे दिनों का बहुत इंतजार होता है जब उसके मम्मी पापा पूरा दिन उसके साथ रहे। ट्रेन की यात्रा मेरी बेटी को बहुत पसंद है क्योंकि सबसे पहले तो उसे अपने मम्मी पापा के साथ रहने का पूरा मौका मिलता है इसके अतिरिक्त नए लोगों से मिलने का भी अवसर मिलता है। क्योंकि ट्रेन में हम ज्यादा यहाँ वहाँ जा नहीं सकते तो हमारा पूरा ध्यान हमारी बिटिया पर ही केन्द्रित रहता है जिससे वह बहुत आनंदित होती है।

सारी तैयारियों में आखिर वह दिन आ गया जब हमें दिल्ली जाना था। तय समय पर हमने सामान लेकर उबर (कैब सर्विसेज) बुक करने का प्रयास किया तो ज्ञात हुआ की उस दिन ऑटो तथा कैब की हड़ताल थी यह जान कर हमें बेहद झटका लगा क्योंकि मैं मेरे पति मेरी बिटिया के अतिरिक्त मेरे माता पिता भी हमारे साथ थे। हमने सोचा नीचे जाकर

कोशिश करते है शायद कोई ऑटो वाला तैयार हो जाए और हमे स्टेशन तक पहुंचा दे । यदि हमे पहले से ज्ञात होता की ऑटो तथा कैब का हड़ताल है तो हम थोडा जल्दी निकलते एवं यातायात के साधन ढूँढने के लिए हमारे पास अधिक समय होता । पांच लोग होने की वजह से हमारे पास सामान भी अधिक था एवं दो वरिष्ठ नागरिक तथा एक बच्चा यह सोच सोच कर हम परेशान हो रहे थे की अब क्या ही होगा । बहुत प्रयास करने के बाद हमे याद आया की हमारे पास में जो परिवार रहता है उनका टूर्स एंड ट्रेवल्स का व्यापार है तो शायद वे हमारी कुछ मदद कर सकें। हमने तुरंत ही भैया को फोन किया उन्होंने कहा मुझे ५ मिनट दीजिये में कुछ करता हूँ। फिर उनका फोन आया तो उन्होंने बताया एक ट्रेवल्स की गाडी आपको स्टेशन पहुंचा देगी परन्तु क्योंकि बड़ी गाड़ी चाहिए थी उसने १००० रुपए मांगे है, हमने कहा कोई बात नहीं आप उसे भेज दीजिए यदि हम समय से स्टेशन नहीं पहुंचे तो हमारी ८००० की टिकट्स खराब हो जाएँगी इसके साथ ही पूरी ट्रिप का प्लान भी खराब होगा सो अलग । ५ ही मिनट में उस ड्राइवर ने गाड़ी हमारी सोसाइटी में लगा दी हम सब गेट पर ही उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे फटाफट सामान गाड़ी में रख ड्राइवर को कहा कृपया हमें जल्दी पहुंचा दे जिससे हमारी ट्रेन न छूट जाए । उन्होंने हमें कहा आप निश्चिंत हो जाइए मैं अवश्य ही आपको समय से पहुंच दूंगा। उन्होंने अपने कहे अनुसार हमे स्टेशन समय से पहुंचा दिया और ट्रेन में बैठने के ५ मिनट बाद ही ट्रेन चल दी। ट्रेन यात्रा का मेरी बेटी ने भरपूर आनंद लिया और सुबह तय समय पर हम दिल्ली पहुंच गए। क्योंकि हम धार्मिक कार्य से दिल्ली गए थे हम अपने गुरुजी की आश्रम में रुके थे जहां बहुत खुली खुली जगह होने की वजह से मेरी बिटिया ने खूब आनंद लिया और बिलकुल भी परेशान नहीं किया। पर क्योंकि दिल्ली में अक्टूबर से ही थोड़ी थोड़ी ठण्ड शुरू हो जाती है इसलिए थोड़ा मौसम में बदलाव की वजह से मुझे तथा मेरी बिटिया को सर्दी खासी हो गयी थी । वापसी की हमारी टिकट फ्लाइट की थी जो की सवेरे तकरीबन ७ बजे की थी और क्योंकि दिल्ली में सब बहुत दूर होता है हमे ५ बजे एअरपोर्ट पहुंचने के लिए ३ बजे घर से निकलना था । मेरी बेटी को देर से सोने की आदत है बहुत प्रयास करने के पश्चात् तकरीबन रात १ बजे वह बड़ी मुश्किल से सोई । क्योंकि ३ बजे निकलना था हम सोए ही नहीं । लगभग तीन बजने में दस मिनट थे तो कैब बुक की एवं तीन बजे सारे सामान ले कर एअरपोर्ट के लिए निकल गए। पूरा रास्ता मेरी बेटी गोद में सोई रही मैंने सोचा कोई बात नहीं फ्लाइट में जगा दूंगी अभी सोने देती हूँ पर एअरपोर्ट पहुंचे तो उससे उठा ही नहीं जा

रहा था वह कभी ऐसा करती नहीं थोड़ी सुस्त लग रही थी बस सो ही सो रही थी। जब हम फ्लाइट में बैठे और फ्लाइट ने उड़ान भरी क्योंकि मुझे सर्दी थी मेरे कान बंद हो गये एवं एक अलग सा ही वैक्यूम महसूस होने लगा पर बादलों के बीच पहुँचे तो इतना खूबसूरत नजारा था की मुझ से रहा नहीं गया मैं अपनी बेटी को उठाने का बहुत प्रयास किया कि देखो बेटा आप बादलों के बीच हो पर वह नहीं उठी उसे तेज़ बुखार आ रहा था। मैं सोचती रही मैंने कितनी तैयारी की थी अपनी बेटी की पहली हवाई यात्रा के लिए पर वह पूरा रास्ता सिर्फ सोती रही। खैर फ्लाइट से उतर कर बड़े ही तनाव में हमने जल्दी जल्दी सामान ले कर कैब बुक कर घर के लिए रवाना हुए। घर जा कर तुरंत ही अपनी बेटी को डॉक्टर के पास ले गए एवं दवाई दिला के लाये। उसे दवाई दे कर मुश्किल से कुछ खिला पिला कर हम सब भी सो गए। शाम को जब कुछ सामान निकालने के लिए अपना बैग खोला तो देखा वह बैग फ्लाइट में सामान इधर उधर करते समय टूट गया था जब हमने फ्लाइट सेवा वालों को फ़ोन किया तो उन्होंने कहा आपको एअरपोर्ट पर चेक करना चाहिए था यदि आपने तब नहीं बताया तो अब कुछ नहीं हो सकता। हमें एअरपोर्ट से घर आने की इतनी जल्दी थी एवं बेटी के स्वास्थ्य की चिंता भी थी इसलिए वह दरार हमें दिखी ही नहीं। हमारे साथ यह पहली बार हुआ था पर इससे हमें यह शिक्षा मिली की हमें अपना सामान एअरपोर्ट पर ही चेक कर लेना चाहिए बाद में यदि आप सामान टूटने की शिकायत करते हो तो वह मान्य नहीं होगी इसके अतिरिक्त यदि हम यात्रा कर रहे हैं तो हम किस तरह एअरपोर्ट या रेलवे स्टेशन पहुँचेंगे यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए की यदि हम उस दिन किसी सार्वजनिक परिवहन जैसे की कोई ऑटो या कैब अथवा किसी अन्य पब्लिक ट्रांसपोर्ट से एअरपोर्ट या रेलवे स्टेशन जाना चाहते हैं तो वे किसी कारणवश बंद तो नहीं हैं। खैर कुछ अच्छी, कुछ बुरी, कुछ खट्टी, कुछ मीठी यादों एवं कुछ नए अनुभवों के साथ हमारी यात्रा पूर्ण हुई। यात्राएं हमारे जीवन में नए अनुभव एवं सीख लेकर आती हैं।

क्या है जीवन !

श्री नरेन्द्र प्रताप
स.ले.प.अ.

यह एक गहरा सवाल है, जिसका जवाब भिन्न-भिन्न परिपेक्ष्य में भिन्न-भिन्न हो सकता है। जीवन को जीववैज्ञानिक दृष्टिकोण से कुछ विशेषताओं जैसे कि अभिवृद्धि, प्रजनन, मेटाबोलिज्म, प्रतिरक्षा तंत्र, और पर्यावरण में अनुकूलन के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

दर्शनशास्त्रीय दृष्टिकोण से, जीवन को स्वयं की खोज, विकास, और अनुभव का एक सफर माना जा सकता है। यह हमारे अस्तित्व में अर्थ, उद्देश्य, और पूर्णता खोजने के बारे में है।

इस बात पर एक शेर अर्ज करता हूँ ,कि

“खुद से मिला तो खुदा मिला,

खुद से जुदाई ,बेखुदी ले आई।

बच गई जीवन में तन्हाई,

ऐ खुदा ,तेरी तलाश ये कहाँ ले आई ॥ ”

जब तलक खुद की तलाश पूरी नहीं होगी तब तक जिंदगानी अधूरी कहानी बनी रहेगी।

कुछ लोग इसे आध्यात्मिक दृष्टिकोण से एक बड़ी कॉस्मिक यात्रा में अस्थायी अस्तित्व के रूप में देख सकते हैं, जिसमें आध्यात्मिक विकास और बोधिसत्त्व प्राप्ति की संभावना होती है। मेरे विचारों में ,“जीवन केवल एक यात्रा है ,जो कई नाटक, कला और गतिविधियों से भरी होती है। इसलिए जीवन में आने वाले किसी भी पल का आनंद लेने में किसी प्रकार की कसर नहीं छोडनी चाहिए। यह हमेशा ही अच्छे और बुरे अनुभवों की एक यात्रा बनी रहेगी। जो कुछ आप कर सकते हैं, वह यह है कि जीवन को विभिन्न अनुभवों का एक समतल पथ बनाने

के तरीके ढूंढने का प्रयास करें, ताकि जो अनुभव हो वो मधुमय हो न कि कड़वे। क्यों कि आखिर में अनुभव व्यक्ति को स्वयं ही तो करने हैं। चाहे फिर भले मन से करे या बुरे मन से।”

अंततः, जीवन का अर्थ व्यक्तिगत है और व्यक्ति से व्यक्ति भिन्न हो सकता है। यह एक सवाल है जो विचारकों, वैज्ञानिकों, और सोचने वालों को शताब्दियों से परेशान करता रहा है, जिसका कभी एक निर्दिष्ट उत्तर नहीं हो सकता।

कार्यालय में आयोजित संयुक्त ऑडिट सप्ताह 2024



ऑडिट सप्ताह 2024 की झलकियाँ



ऑडिट दिवस के अवसर पर आयोजित हेरिटेज वाक



ऑडिट दिवस के अवसर पर आयोजित हेरिटेज वाक में सम्मेलित सभी कार्यालयों के अधिकारी एवं कर्मचारी



ऑडिट दिवस के अवसर पर अपना वक्तव्य रखते हुए निदेशक महोदय

सच क्या है, झूठ क्या है?

श्री नरेन्द्र प्रताप
स.ले.प.अ

धुंधली सी है दुनिया, परछाई सा है जीवन,
सच क्या है, झूठ क्या है, ये सवाल हर पल जपता रहता है मन।
आँखों से देखते हैं, पर क्या सत्य है नज़ारा?
कानों से सुनते हैं, पर क्या सच में है पुकारा?
स्पर्श से जो जानते हैं, पर क्या सच है वो अनुभव?
मन से जो सोचते हैं, पर क्या सच में है उसमें कोई दम?
बदलते हुए मौसम, बहती हुई नदियां,
कब सच बन जाते हैं, कब धुआँ हो जाती हैं जिंदगानियाँ?
खोज रहे हैं, पर मिलता है क्या अंत में?
बस सफर का है मज़ा, बदलते रहे हर पल के रंग में।
शायद सच और झूठ, दो पहलू हैं एक सिक्के के,
जीवन का सार है दोनों का, अनुभव के हर झोंके में।
तो चलो जीते हैं पल को, सच और झूठ से अनबँधे,
खुद को पाते हैं, अनुभव के हर रंग में रंगे।

बारिश का मौसम था। इसी मौसम की एक रात बारिश के साथ साथ तेज हवा भी चली। सुबह घर के बाहर झाँकने पर मैंने देखा कि सड़क के दोनों ओर काफ़ी पेड़ गिरे हुए थे। मैं अक्सर सुबह-सुबह घुमने निकल जाता हूँ। उस दिन मैं काले बादलों से ढके आसमान से बेपरवाह हर दिन की तरह घुमने निकल गया। घर से थोड़ी ही दूरी पर एक सुन्दर बगीचा है। मैं बगीचे में जा पहुँचा और वहाँ बनी पगडण्डी पर टहलने लगा। मैंने टहलते हुए देखा कि एक फूल का पेड़ था जो शायद रात में बारिश के साथ चली तेज हवा की मार से अपनी जड़ें ढीली कर चुका था और एक तरफ झुकाव किये हुए था। उसी पेड़ के पास एक बड़ा पेड़ था, जिसपर काँटों का मानों सिंहासन सजा हुआ था। बारिश के साथ तेज़ हवा का उस पर कोई असर नहीं था। वह एक दम सीधा था। दोनों पेड़ों के पास से टहलते हुए मुझे हवा की चीरती आवाज के साथ कुछ अजीब सी आवाज सुनाई दी। मानों मुझे लगा कि वे दोनों पेड़ आपस में बातें कर रहे हों। मैंने अपने काल्पनिक भाव से उनके संवाद को सुना और कुछ इस तरह से समझा जिन्हें मैं आगे की पंक्तियों में बयाँ कर रहा हूँ।

मानों काँटों वाला पेड़ फूल वाले पेड़ से कह रहा था कि जिन्दगी में अपने आपको ऐसा रखो जिससे कोई भी आपको छूने से डरे। आपके आस-पास भी नहीं आए। तुम जैसे फूल के पेड़ का भी क्या जीना? देखो, हर दिन लोग तुम्हारे पास आते हैं और तुम्हारे फूलों को लेकर चले जाते हैं। कमाते तुम हो और खाता कोई और है। इससे अच्छा है कि तुम कुछ कमाओ ही मत। तुम्हारा ये कैसा जीवन है? तुम मुझे देखो, किसी की मजाल जो मुझे हाथ लगा दे। मेरे काँटों ने मुझे इतना महफूज़ किया है कि कोई भी मेरे पास नहीं आता। तुम्हारा क्या? कोई बच्चा भी तुम्हें आ कर छू देता है, तुम्हारे फूल को तोड़ देता है और तुम कुछ नहीं कर पाते। तुम खुद की रक्षा भी नहीं कर पाते। जब रात को

तेज हवा चली थी जब मैंने देखा कि हवा भी तुम्हें बेरहमी से थपेड़े मार रही थी। यदि तेज हवा की बात छोड़ भी दूँ, तब भी मैंने देखा है कि जरा सी तेज धूप हुई और तुम्हारे चेहरा का नूर यानी तेरे ये फूल मुरझा जाते हैं। तुम किसी भी हालात में खुद को संभाल नहीं पाते हो। तुम मेरे जैसे बनो और जिन्दगी को शान से जीओ और बिना किसी परेशानी के। मेरे जैसे रहोगे तो कोई भी तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकता।

फूल का पेड़ ये सब सुन रहा था। उसका सयंम सज्जन की तरह उसे शालीन रखे हुआ था। ऐसे होता देख काँटों के पेड़ का हौसला बढ़ता गया। फूल ने सिर्फ इतना ही कहा कि मैं आपसे कुछ कहूँगा तब आप उसका पहले की तरह मजाक ही बनाओगे। लेकिन मैं इतना जरूर कहूँगा कि आपको स्वयं को वक्त रहते बदलना चाहिए नहीं तो आपको इसका मूल्य चुकाना होगा। मैं बात को बढ़ाना नहीं चाहता, इतना कहते हुए फूल के पेड़ ने अपने स्वरो को विराम दे दिया।

दोनों पेड़ों की बातें सुनते-सुनते मैं विराम के लिए पास में रखे बेंच पर बैठने के लिए आगे बढ़ा। तभी अचानक से तेज हवा का झोंका आया और एक अजीब सी आवाज सुनाई दी। मैं किसी तरह आंखें बंद करके बेंच पर बैठ गया और कुछ देर बाद जब तेज हवा का झोंका गुजर गया तब मैंने देखा कि काँटे का पेड़ हल्के झुकाव के साथ फूल के पेड़ के साथ सटा हुआ था। उसका ये हाल देख मुझे लगा कि यह काँटे का वृक्ष हिंसक होता जा रहा है। मैं चाह रहा था कि उनका संवाद झगड़े में नहीं बदलना चाहिए। उनके संवाद से मुझे समाज में अक्सर सज्जन और दुर्जन के बीच के संवाद झगड़े में परिवर्तित होने के उदाहरण जैसी आशंका ने घेरना शुरू कर दिया। मैं मन ही मन सोच रहा था कि समाज में अक्सर सज्जन जब जब अपना सयंम दिखाता है, तब तब दुर्जन का साहस उसे सज्जन की कमजोरी मान कर उग्र हो जाता है।

मैं इससे आगे कुछ सोच पाता तब तक मैंने बगीचे के माली को आते देखा। वह सभी पेड़ देखते हुए और निरीक्षण करते हुए आ रहा था। जैसे ही वह उन दोनों पेड़ों के पास पहुँचा, तभी पास से गुजरते हुए एक बुजुर्ग व्यक्ति भी वहाँ रुक गए। उसके बाद उसके पीछे-पीछे चल

रही एक महिला भी आ रुकी। अभी वह रुकी ही थी तभी उसके पीछे-पीछे चल रहे कुछ मासूम बच्चे भी दौड़ते हुए आए और वहाँ रुक गए। वहाँ पर रुके बुजुर्ग ने माली से अनुरोध किया कि इस काँटे के पेड़ को यहाँ से हटा दो क्योंकि अक्सर इसके काँटे राह में परेशानी खड़ी करते हैं। महिला ने कहा कि मैं कई बार फूल तोड़ने आती हूँ तब काँटे परेशानी पैदा करते हैं। बच्चों ने कहा कि अंकल ये फूल बहुत खुशबूदार हैं और बहुत सुन्दर हैं। आप गिरे हुए फूल के पेड़ को मिट्टी के सहारे से खड़ा कर दो और इस कार्य में हम आपकी मदद करेंगे। बच्चों का इतना कहना था कि महिला और बुजुर्ग व्यक्ति ने भी उनके सुर में सुर मिलाया।

वहाँ पर इकट्ठे हुए लोगों की बातें सुन कर अब फूल के पेड़ को काँटे के पेड़ के अंत का अहसास हुआ। उसने काँटे के पेड़ से कहा कि मुझे आपके ऊपर आने वाली विपत्ति का अहसास है और इस बात का मुझे दुःख भी हो रहा है। अभी भी पश्चाताप करके प्रभु को याद करो, हो सकता है कि आपकी विपत्ति टल जाए। मैं ही नहीं ये इकट्ठे हुए लोग भी आपके बर्ताव से नाखुश हैं। उसने समझाते हुए कहा कि मैंने आज तक किसी को कष्ट नहीं दिया चाहे वह बच्चा हो या बुढ़ा, वह अमीर हो या गरीब। मुझे चाहे शहीदों की चिता पर इस्तेमाल किया हो या भगवान की मूर्ति पर। मुझे चाहे चलते राहीगार ने अपने पाँव से कुचल दिया हो। मैंने हमेशा नम्रता और सेवाभाव को ही आगे रखा। मुझे छू कर जाने वाली हवा भी दूर-दूर तक सभी को मेरे यहाँ होने का अहसास दिलाते हुए प्रसन्न कर देती है। मेरे पास आकर तितलियों और मधुमखियों का गुंजन किसी मधुर संगीत से कम नहीं होता है और मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब भी बच्चे मुझे अपने कोमल हाथों से छूते हैं तब मुझे इनकी मासूमियत और प्रेमभावना प्रसन्न कर देती हैं। लेकिन आपने कभी भी किसी को प्रसन्न होने का कोई अवसर नहीं दिया। इतना ही नहीं आपने तो मेरे पास आने वाले लोगों को भी परेशान किया। आपने काँटों से उनके पाँव पर चुभन की और उनके कपड़ों को चीरने का कोई मौका नहीं छोड़ा। आपने किसी भी मुसाफिर को छायाँ नसीब नहीं करवाई। किसी पक्षी को अपनी भुजाओं में घोंसला नहीं बनाने दिया या मैं यूँ कहूँ कि किसी भी पक्षी ने अपने घोंसलें बनाने के लिए

आपको काबिल तक नहीं समझा तो कुछ भी गलत नहीं होगा। आप अपने जीवन में अपने काँटों को हथियार की तरह इस्तेमाल करते रहे। आप ने किसी को भी अपने पास तक नहीं आने दिया। ये काँटे नहीं बल्कि तेरा अहंकार जो ये सब करवाता है। ये कर्मों का ही नतीजा है कि आपको उखाड़ फेंकने के लिए और मुझे सहारा देने के लिए ये लोग तैयार हैं। लेकिन फिर भी मैं चाहूँगा कि आपका यह संकट गुजर जाए और आप पिछली गलतियों से सबक लेकर कुछ स्वयं में बदलाव करें।

काँटों के पेड़ के पास कोई जवाब नहीं था। उसे अहसास हो रहा था कि फूल का पेड़ सही कह रहा है। उसे लग रहा था कि आज उसे भी किसी खूंखार अपराधी की तरह माली रुपी पुलिस के साथ मुठफेड़ में मार गिराया जाएगा। दोनों पेड़ों के संवाद के बीच माली ने पेड़ों के चारों ओर घूमते हुए सही जगह तलाशी और काँटे के पेड़ की जड़ पर अपने तेज धार वाली कुल्हाड़ी से प्रहार किया। कुल्हाड़ी के हर प्रहार पर अलग सी चीख सुनाई दे रही थी। ऐसा लग रहा था मानों काँटों के पेड़ के अहंकार से सीचें हुए पापों का जवाब कुल्हाड़ी अपने प्रहार से दे रही हो। लगातार प्रहार के बाद अब काँटे के इस पेड़ का अंत नजदीक था। हर प्रहार पर हिलता हुआ मानों अपने तरीके में हर उस अपराधी की तरह क्षमा याचना कर रहा था जब किसी अपराधी को उसके गुनाह की सजा सुनाई जाती है। लेकिन कहते हैं कि अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

अब माली ने एक आखिरी वार किया और काँटों का वह पेड़ औंधे मुँह गिरा। पेड़ की मानों जीवन लीला अब समाप्त हो चुकी थी। उसे घसीट कर किनारे कर दिया। बाद में माली ने मिट्टी को खोदते हुए उसकी जड़ को भी निकाल दिया और आने वाले समय में दोबारा पनपने की संभावना को भी खत्म कर दिया। इसके बाद वहाँ पर खड़े सभी लोगों ने मिट्टी और लकड़ी के सहारे से फूल के पेड़ को सीधा किया। फूल का पेड़ सीना तान के खड़ा था मानों वह बहुत खुश था। ऐसा लग रहा था कि वह अपने फूलों की महक से सभी का शुक्रिया अदा कर रहा हो। उसके छोटे-छोटे फूल मानों उसकी आँखें हो और उनकी चमक

यह बयाँ कर रही हो कि उसे न्याय मिल चुका है और बहुत खुश है।
मेरे मन में बार बार एक ही बात आ रही थी कि किसी ने सही कहा है
कि कर भला तो हो भला और अंत बुरे का बुरा।



ओणम के अवसर पर कार्यालय के कार्मिक द्वारा फूलों से बनाई गई सुन्दर रंगोली

गणतंत्र दिवस समारोह की कुछ झलकियाँ



गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर कार्यक्रमों को संबोधित करते हुए माननीय प्रधान महानिदेशक महोदय



गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर कार्यक्रमों को पुरस्कृत करते हुए माननीय प्रधान महानिदेशक महोदय



गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर कार्मिको को पुरस्कृत करते हुए उप निदेशक महोदया



गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर उपस्थित माननीय प्रधान महानिदेशक , वरिष्ठ उप महालेखाकार , निदेशक महोदय एवं उप निदेशक महोदया

शहीद का पैगाम

नरेश सिंह
स.ले.प.अ.

हे हमवतन शहीदों को न भूलों बलिदानी हैं वो
एक शहीद का पैगाम मिला है वो मुझसे सुनों
सिर पर कफ़न ले खुशी से ली शहादत जिन्होंने
कहाँ हैं कैसे हैं कहते हैं क्या वो आज मुझसे सुनों

शहीद होकर भी माँ की गोद में सोया हुआ हूँ मैं
मरा नहीं पर तिरंगे की ढाल बन जिन्दा हूँ मैं
दुश्मनों को मात दी है मैंने हर बार
मरा नहीं हूँ मुझे शहादत मिली है और जिन्दा हूँ मैं

कहता हूँ अपने वतनवासियों को मैं
दुनिया में अमर होकर अभी जिन्दा हूँ मैं
मेरे गम में ना डुबो, खूब खुशियाँ मनाओ
तुम्हारी रक्षा के खातिर अभी भी जिन्दा हूँ मैं

शत्रु की हर नापाक नियत और दुःसाहस को
भस्म कर वतन की खाक में मिला दूँगा मैं
तिरंगे को संभाले घात लगाए बैठा हूँ मैं
बैरी को हमेशा की नींद सुला दूँगा मैं

फक्र है मुझे मेरी माँ के लिए अपनी शहीदी पर,
शहीद हो कर भी अभी हौसलों से जिन्दा हूँ मैं
हर पल सुकून का अहसास है माँ की गोद में,
माँ की आन बान शान की खातिर अभी जिन्दा हूँ मैं

मुझे कोई डर नहीं गम नहीं ना ही कोई पछतावा है
पर अपनों की बेरुखी से जरा खिन्न हो गया हूँ मैं
मेरे जनाजे में तिरंगे के साथ लाखों शामिल थे
अचरज है अब उन लाखों के यादों से निकल गया हूँ मैं

मेरी विधवा वधू और बेसुध माँ को कोई सहारा दिलाओ,

मेरी बहना का भाई बन उससे कोई राखी तो बंधवाओ
मेरे परिजनों के सिर दुखों का पहाड़ गिरा है
सच्चा नहीं झुठा सही, उन्हें कोई भरोसा तो दिलाओ

मेरे घर और जमीन पर दबंगों की नज़र है
बुढ़े पिता मेरे बिना बेसुध बिस्तर पर बेखबर है
बेटे बेटी को पडोसी ने सता रखा है
अचरज है शहीद के परिजनों की मजबूरी से हर कोई बेखबर है

दुश्मनों की नली तोड़ने को आज भी जिन्दा हूँ मैं
अपने वतनवासियों के आगे बेबस हूँ मैं
अपनों को मारा तो मेरी माँ के ही पूत मरेंगे
यही सोच कर बस वीर होकर भी बेबस हूँ मैं



ओणम के अवसर पर आयोजित पारंपरिक भोजन ग्रहण करते हुए प्रधान
महानिदेशक, प्रधान महालेखाकार, वरिष्ठ उप महालेखाकार एवं उप महालेखाकार
महोदया

चाय प्रेमी की कलम से

बबिता
हिंदी अधिकारी

चाय बारिश, तुम, मैं और बोलती हुई बूंदें !!
भीगे पत्ते की सरसराहट, भीगा हुआ मन
घुमड़ते हुए मेघ, बरस जाने की आस,
भीग जाने की चाहत, डूब जाने की उम्मीद
चाय बारिश, तुम मैं और बोलती हुई बूंदें !!

कभी बेपनाह बरसी हुई, कभी गुम होती हुई
कभी बिना बोले आँखे पढ़ने की तुम्हारी चाहत
और कभी बिना बोले सब सुनता हुआ मेरा मन
यह बारिश भी कुछ कुछ तुम सी है
चाय बारिश, तुम, मैं और बोलती हुई बूंदें !!

चाय सी कड़क बातें करता तुम्हारा मन
उबलती चाय सा गुस्सा तुम्हारा
मेरे ख्यालों का वो अथाह सैलाब
बारिश की भीगी बूंदों जैसा शांत मेरा मन
चाय और बारिश की सौधी खुशबू संग तुम्हारा साथ
चाय बारिश, तुम, मैं और बोलती हुई बूंदें !!

बारिश की बूंदों जैसे उसके आने की आस
चाय के प्याले के साथ बेशुमार बातों की चाहत
दिल से दिल के जुड़ने की उम्मीद
मनन की व्यथाओं को स्वतः की खोलता मेरा मन
बारिश के बूंदों की तरह सृष्टि में समाहित होने की आस
चाय बारिश, तुम, मैं और बोलती हुई बूंदें !!

आधुनिक दुनिया...

बिनय कुमार
लेखापरीक्षक

पता नहीं आजकल हमलोग क्या खा रहे हैं,
उम्र के साथ साथ, बाल भी पकते जा रहे हैं!!2!!
मोबाइल के चारों तरफ हमारी जिंदगी ऐसे चक्कर काट रही है,
सर तो घूम ही रहा है, आँखें भी धँसती जा रही हैं!!2!!
बच्चों को भी छँया छँया वाले फोन की जगह Android थमाया जा रहा है,
पढाई का तो पता नहीं, बाकी सब कुछ सिखाया जा रहा है!!2!!
पैसे कमाने की हौड़ में हम आगे बढ़ते जा रहे हैं,
अपने तो पीछे रह गए, और हम अकेले खुशी मना रहे हैं!!2!!
इस टेक्नोलॉजी की भीड़ में हमने एक ऐसी काल्पनिक जिंदगी बना ली है,
जिसमें कहने को तो कई दोस्त हैं,
पर असल में हमारी जिंदगी खाली है!!2!!
तुम ये करो, तो तुम्हारी जिंदगी अच्छी हो जायेगी,
तुम वो करो, तो तुम्हारी जिंदगी अच्छी हो जायेगी,
ऐसी किर्याकलापों से जिंदगी मृगतृष्णा बनकर रह गई है,
सफलता तो दिख नहीं रही और मोटीवेशनल चैनल्स के Subscribers बढ़ते जा रहे है!!
ये Netflix और सोशल मीडिया के जमाने में,
घर बैठे खाना आ रहा है,
बाकी का तो पता नहीं, लेकिन महंगाई और मोटापा बढ़ते जा रहा है!!2!!
आजकल के युवाओं में Rash driving का गजब का नशा चढ़ा है,
बस 15 सेकेंड की रिल्स के लिए, जान से हाथ धोना पड़ा है!!2!!
इसलिए मेरा सबसे है बस यही कहना,
इस आधुनिकता भरी दुनिया में,
खुद के साथ-साथ अपनों का ख्याल रखना!!2!!

भ्रष्टाचार को ना कहें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें !!

बिनय कुमार
लेखापरीक्षक

साधारण भाषा में भ्रष्टाचार का तात्पर्य उस कृत्य से है। जिसमें व्यक्ति द्वारा अपनी व्यक्तिगत लाभ के लिए उसे सौंपी गई शक्ति का दुरुपयोग करता है। जो रिश्ततखोरी, धोखाधड़ी, घोटालों और अपनों को फायदा पहुँचाने इत्यादि के रूपों में होता है।

यही कारण है कि आज भ्रष्टाचार पूरी दुनिया में एक व्यापक समस्या बनकर उभरी है और विश्व का लगभग हर देश इससे पीड़ित है। चूँकि भ्रष्टाचार किसी भी देश की आर्थिक, राजनितिक और सामाजिक विकास के लिए बाधा उत्पन्न करता है, जिसके कारण देश के नागरिकों की भलाई खतरे में पड़ जाती है। इसलिए भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना पूरी दुनिया के सामने एक बड़ी चुनौती बन गई है।

हालाँकि हमारे देश की सरकार इसे रोकने के लिए विभिन्न प्रकार के अभियान चला रही है। जो कि निम्नलिखित हैं।

- **सी.ए.जी. की भूमिका (Role of CAG):** विभिन्न लेखापरीक्षाओं द्वारा सरकारी रकम का गलत उपयोग की जाँच करके सरकार के सामने रिपोर्ट प्रस्तुत करके इससे सरकार को अवगत करना।
- **केन्द्रीय जाँच विभाग (CBI):** भ्रष्टाचार और फ्रॉड से सम्बन्धित संगीन मामलों की जाँच करके सत्यता का पता लगाना।
- **प्रवर्तन निदेशालय (ED):** एक देश से दूसरे देश में पैसों का हेरफेर से सम्बन्धित क्रियाकलापों की जाँच करके भ्रष्टाचार को रोकने का प्रयास करना।
- **CCS Conduct Rules:** इसके तहत सरकारी कर्मचारी को किसी भी प्रकार का गैरकानूनी कार्य करने से प्रतिबंध लगाया जाता है।

- **सतर्कता जागरूकता सप्ताह (Vigilance Awareness Week):** इसके तहत एक ऐसा माहौल बनाया जाता है जिसमें सरकारी कर्मचारी को भ्रष्टाचार में लिप्त हुए बिना अपनी नैतिकता के प्रति अडिग रहे।
- **Oath, Pledge & Prevention of Corruption Act:** इसके तहत भ्रष्टाचार ना करेंगे ना करने देंगे के विचार को कर्मचारियों को शपथ ग्रहण के द्वारा आत्मसात कराया जाता है।
- **भारतीय दंड संहिता 162 (IPC 162):** इस दंड संहिता के तहत भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों पर कार्यवाही करने का प्रावधान है।

उपरोक्त वर्णित अभियान के तहत भ्रष्टाचार में लिप्त सभी पात्रों जैसे कि रिश्तत लेने वालों और रिश्तत देने वालों सभी को समान रूप से दण्डित करने का प्रावधान है।

देश को अंधकार में धकलने वाले इस महामारी रूपी भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ने के लिए देश के आम नागरिक को भी सरकार के इस अभियान में कदम से कदम मिलाकर साथ देने की आवश्यकता है और साथ ही साथ अपने स्तर पर भ्रष्टाचार ना करेंगे, ना करने देंगे, ना रिश्तत लेंगे, ना रिश्तत देंगे इत्यादि जैसी विचारधारा को अपने जीवन में उतारने की जरूरत है।

क्योंकि अगर आज हम एकजुट होकर इस भ्रष्टाचार (जो कि दीमक की भांति हमारी अर्थव्यवस्था को चाट रहा है) के खिलाफ नहीं लड़ते हैं तो यह हमारे देश की आधारभूत ढांचे को खोखला कर देगा जिसके कारण हमारा विकसित और समृद्ध राष्ट्र का सपना सपना ही बन कर रह जायेगा।

जहाँ तक राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता की बात है तो देश के हर नागरिक को राष्ट्र की समृद्धि, राष्ट्र की भलाई और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। देश की समुचित प्रगति के लिए हमारे समाज की भी अहम भूमिका होती है, अतः हमारे समाज के हर वर्ग के लोगों को सामूहिक रूप से भ्रष्टाचार उन्मूलन के इस अभियान में बढ़चढ़कर हिस्सा लेने की जरूरत है। तभी हम अपने देश के विकास में बाधा उत्पन्न करने वाले इस भ्रष्टाचार रूपी खरपतवार को बाहर निकालकर फेंक सकते हैं।

पिछले कुछ सालों में सरकार द्वारा इस समस्या को कम करने के लिए कुछ बेहतर कदम उठाये गए हैं। जो कुछ इस प्रकार हैं।

- **Digitalization:** पारदर्शिता और सक्षम अधिकारी की जवाबदेही को बढ़ाना।
- **GeM:** लोगों की भागीदारी को कम करके स्पष्ट और उचित रूप से व्यापार करना।
- **सब्सिडी सीधे बैंक खाते में हस्तान्तरण:** इसके तहत बिचोलिये की भूमिका को समाप्त करना।
- **JAM Trinity:** जिसके तहत जन-धन खाते को आधार से मोबाइल नंबर लिंक करना, जिससे सरकारी रकम को सीधे लाभार्थी के खाते में भेजा जा सकता है।

उपरोक्त सराहनीय कार्यों द्वारा भ्रष्टाचार को बहुत हद तक कम किया गया है। भ्रष्टाचार के खिलाफ सरकार इस मुहीम में आम जनता द्वारा उठाया गया एक कदम देश को प्रगति की ओर ले जाने का काम करता है। देश की भलाई, प्रगति और इसके बेहतर भविष्य के लिए हमारे द्वारा ईमानदारी पूर्वक किया गया काम हमें अपने देश के प्रति समर्पित होने का एहसास दिलाता है।

**इसलिए आईये आज से हम एक नई शुरुआत करें :-
भ्रष्टाचार को ना कहें और राष्ट्र की समृद्धि को हाँ कहें !!**

विदाई की यात्रा

सुश्री भाविनी जीनगर
लेखापरीक्षक

दो साल पहले श्रेया की नौकरी बड़े शहर में लगी थी। जीवन के 25 साल उसने अपने गाँव में गुज़ारे हैं, नौकरी से पहले वह कभी गाँव से दूर नहीं गई थी। नौकरी के लिए ही पहली बार अपने घर से निकली और अब वह शहर में रहने लगी है, वो शहर जिसका सफ़र उसके घर तक 24 घंटे का है।

करीब दो साल बाद वह राखी पर अपने घर लौटी थी। उसकी ट्रेन यात्रा के दौरान उसकी आँखों में एक चमक देखने को थी। हर स्टेशन पर वो अपने घर के नजदीक आ रही थी। दो साल पहले जब वह शहर गई थी तब ज़िन्दगी के एक नए सफ़र की शुरुआत करने जा रही थी। वो सफ़र जो उसके सपनों को एक नई राह दिखाने वाले था।

गाँव के लोगों ने कहा था कि शहर की ज़िन्दगी उसके लिए नए रंग और नए सपने लेकर आएगी। श्रेया का अपने गाँव की यादों से गहरा रिश्ता था। शहर में नई शुरुआत करने के लिए श्रेया ने अपने गाँव, परिवार, सहेलियों और खुशनुमा यादों को छोड़ा था लेकिन उसकी आँखों में नई उम्मीद थी, उसने अपने सपनों की तरफ कदम बढ़ाए थे।

आज दस दिन बाद वापस शहर जाने का समय आ गया है, स्टेशन पर सुनहरी धूप चमक रही थी। ट्रेन के बाहर श्रेया का परिवार और दोस्त थे, जिन्हें आँखों में विदाई की लकीरें लिए हुए श्रेया, जाने से पहले आखिरी बार जी भर कर देख रही थी। उनकी आँखों में भी विदाई की भावना थी लेकिन वे श्रेया को जीवन में आगे बढ़ते देख खुश थे। स्टेशन पर ऐसे विदाई के अनेक दृश्य देखने को मिल रहे थे।

अभी ट्रेन की सीटी बजी है जो कि संकेत है की ट्रेन अब चलने को तैयार है और कुछ ही देर में श्रेया अपनी अगली यात्रा की ओर बढ़ जाएगी।

इतने समय बाद शहर की भीड़ से दूर, अपनों के बीच रहकर अपने गाँव में बिताये 10 दिन इतने सुहाने थे कि ट्रेन के दरवाजे पर खड़े खड़े श्रेया का मन भारी होने लगा। अब उसे अपने सपने खोखले लगने लगे थे। शहर में अकेलेपन में रहते हुए अपने सपनों की दुनिया उसे गाँव की दुनिया के सामने रास नहीं आ रही थी। श्रेया का मन कर रहा था वह अभी ट्रेन से नीचे उतरकर अपने गाँव लौट चले अपने परिवार के साथ हमेशा के लिए। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकती, वो कश्मकश में है। ऐसी कश्मकश जिसमें आज शायद हम सब भी हैं, कि अपने सपनों और अपनों के बीच की दूरी आज के ज़माने में कैसे कम की जाए।



ओणम में आयोजित पूजा में सम्मेलित होते हुए माननीय प्रधान महानिदेशक एवं प्रधान महालेखाकार महोदय

कार्यालय में महिला दिवस समारोह



महिला सप्ताह के अवसर पर कार्मिकों को पुरस्कृत करते हुए उप महालेखाकार महोदय



कार्यालय में महिला दिवस आयोजन की कुछ झलकियाँ

माँ का मायका

मयंक मिश्रा
स.ले.प.अ.

माँ का एक मायका है,
जहां उसने ठुमक-ठुमक कर चलना सीखा था,
जहां की दीवारें कभी माँ की आवाज से चहकती थीं,
जहां के आँगन में वह मन भर खेला करती थी,
जहां के पास पड़ोसी भी उसकी शैतानियों की चर्चा किया करते थे ।

माँ का एक मायका है,
जहां उसने अपने बचपन को बेपरवाह गुजारा था,
जहां उसने जीवन के हसीन सपने देखे थे,
और उसकी माँ ने उसे समाज के हिसाब से रहना सिखाया था,
फिर एक अच्छा सा लड़का देख उसको ब्याहा था ।

माँ का एक मायका है,
जहां पहले वह अक्सर जाती थी,
जहां वह खुल कर हस्ती, जो मर्जी कर पाती थी,
जहां वह बहुत देर तक सोती थी,
फिर धीरे धीरे जिम्मेदारियों ने घेर लिया,
और माँ ने बिना वजह मायके जाना छोड़ दिया ।

एक दिन माँ की माँ नहीं रही,
इसके साथ ही मायके का एहसास भी नहीं रहा,
फिर माँ ने अपना मन बदल लिया,
बच्चों के भविष्य में अपना सुख ढूँढ लिया ।

जब बच्चों का भविष्य बन गया,
बेटी ससुराल गई और बेटा नौकरी करने बाहर चला गया,
आज सब बच्चे अपने जीवन में मस्त हैं,
और माँ आज भी अपनी पुरानी यादों में व्यस्त है ।

अब हम बच्चे ही कुछ कर सकते हैं,
तो क्या हुआ अगर रोज माँ हमारे पास नहीं होती,
रोज तो वह मायके भी कहाँ जाती थी,
माँ के पुराने दिन लौटा नहीं सकते, पर कुछ तो कर ही सकते हैं ।

मायका न सही मायके का एहसास तो करवा सकते हैं,
कुछ ऐसा तो कर सकते हैं जिस से वह बिन वजह हंस सके,
कुछ ऐसा तो कर सकते हैं माँ चाहे तो जब तक मन हो सो सके,
बढ़ी हुई उम्र में चाहे वह चहक न पाए, लेकिन मन खोल के बोल सके।

कुछ ऐसा तो कर सकते हैं, कि हम विश्वास से कह सकें,
जब मेरी माँ मेरे साथ होगी,
तो माँ के साथ मायके सा एहसास होगा ।

हाँ आज भी माँ का एक मायका है,
जहाँ भी मैं हूँ वहाँ मेरी माँ का मायका है ।

जब माँ मेरे पास हो, कुछ ऐसा तो कर करें कि माँ को हमारे पास आ
के अपनी माँ जैसे अपने पन का एहसास हो,

पहले जैसी आजादी का एहसास करा सकते हैं, ।
कुछ ऐसा कर सकते हैं ।

आपका सच्चा मित्र कौन है ?

एम. श्रीनिवास राव,
सहायक पर्यवेक्षक

बचपन में हम स्कूल के दिनों से दोस्त बनाते हैं। जब भी वर्ग बदलते हैं, मित्र भी बदल जाते हैं क्योंकि नये मित्रों से हमारा परिचय होता है। कभी-कभी हम या तो माता-पिता के नौकरी स्थानांतरण या उच्च अध्ययन के कारण अपना गृह नगर बदल लेते हैं। वहां फिर नए दोस्त बनते हैं। इसके बाद अगर आप कोई नौकरी जॉइन करेंगे तो वहां भी आपके नए दोस्त बनेंगे। फिर वहां भी वही दोहराया जाता है, जब ऑफिस बदलता है, जब नौकरी बदलती है तो नए दोस्त बनते और बदलते हैं।

यूं तो दोस्त हर किसी के जीवन में अहम भूमिका निभाते हैं। जब हम अपने परिवार को छोड़कर किसी नई जगह पर जाते हैं, तो दोस्त ही हमारा साथ देते हैं ताकि हमें घर की याद न आये। पुराने समय में लोग अपने शहर या आसपास के कस्बों में काम करने जाते थे। लेकिन आजकल ज्यादातर लोग पढ़ाई के चलते घर से बाहर और परिवार से दूर रहने लगे हैं। रोजगार के मामले में वे अपना जिला ही नहीं, बल्कि अपना राज्य और अंततः देश भी छोड़ रहे हैं। इसलिए हम परिवार के सदस्यों की तुलना में दोस्तों के साथ अधिक समय बिताते हैं।

जो लोग दूर रहते हैं वे कभी-कभी गाँव के महत्वपूर्ण समारोहों और त्योहारों में नहीं जा पाते हैं। वे कभी कभी ही जा पाते हैं। इसलिए हमारे साथ-साथ हमारी अगली पीढ़ी हमारे बच्चे भी अपने सभी रिश्तेदारों से नहीं मिल पाते हैं। दुःख की बात तो यह है कि हमारे बच्चे हमारे कुछ रिश्तेदारों को देख भी नहीं पाते। हमारे बचपन में हमारा ब्रह्माण्ड बहुत बड़ा था जो अब बहुत छोटा हो गया है। इसलिए हमारे आस-पास रहने वाले लोग हमारे रिश्तेदार हैं चाहे वह या तो ऑफिस से या हमारे अपार्टमेंट से हों। इसलिए, हम जहां भी हों, हमें अपने आस-पास के लोगों के साथ अच्छे संबंध रखने चाहिए, क्योंकि वे हमारे लिए सब कुछ हैं वे हमारे असली दोस्त और रिश्तेदार हैं।

मैंने ऊपर जो कहा है, उसका अनुभव हर किसी को हुआ है और हो रहा है। क्या यह सच है! क्या यह सच नहीं है ! दोस्त हर किसी की जिंदगी में अहम होते हैं। प्रत्येक चरण में विभिन्न प्रकार के मित्र होते हैं। लेकिन आइए इसे एक पल के लिए अलग रख दें।

हर किसी की जिंदगी में एक न एक दिन कोई ना कोई जरूर आता है। वही आपका जीवन साथी है। हर किसी की तरह उसके भी माता-पिता, दोस्त, रिश्तेदार और सभी लोग हैं। ऊपर बताई गई सभी बातें उनके जीवन में भी मौजूद हैं। हालाँकि वे बचपन से एक साथ रहे हैं, वह उन सभी को छोड़कर एक नए व्यक्ति के साथ आती है जिसे वह नहीं जानती है। उसके साथ एक नई जिंदगी की शुरुआत होती है। वह उसके लिए सब कुछ है। वह नौकरानी बन जाती है। वह उसके लिए खाना बनाती है। उसके बच्चे की मां बनकर उनका पालन-पोषण करती है। वह आपके बच्चे की शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य में भी आगे बढ़ने के लिए कड़ी मेहनत करती है । वह आपके बच्चों के अच्छे भविष्य और आप सभी की भलाई के लिए दिन- रात प्रार्थना करती है। आपके पोते-पोतियों की सेवा भी करती है और उनसे भी प्यार करती है। उनके साथ खेलती है। वह हमारे बच्चों की पसंदीदा दादी होंगी। बच्चों की सबसे पसंदीदा व्यक्ति बन जाती है।

इस प्रकार अपने जीवन साथी को जो 75 वर्षों तक आपके साथ रहकर निस्वार्थ भाव से आपकी और आपके परिवार की सेवा करती है वही आपके जीवन की सच्ची मित्र होती है। अपने जीवनसाथी को धन्यवाद दें और उसे विश्वास दिलाएं कि आप भी/ही उसके सच्चे दोस्त हैं।

कौन सा सही है?

एम. श्रीनिवास राव,
सहायक पर्यवेक्षक

कभी-कभी हमारे सामने कुछ अजीब परिस्थितियाँ आ जाती हैं। कभी-कभी हमें नहीं पता कि हमें कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

चूँकि मैं आंध्र प्रदेश से हूँ इसलिए मैंने 24 वर्षों में कई बार रेल यात्रा की है। अकेले यात्रा करते समय कई बार मुझे निचली बर्थ मिल जाती थी, लेकिन मैंने एक बार भी निचली बर्थ पर यात्रा नहीं की। क्योंकि साथी यात्री इसी तरह पूछते हैं “क्या आप अकेले हैं, क्या आप ऊपरी बर्थ ले सकते हैं?” हमारे लोग ऊपर नहीं चढ़ सकते और वे आपसे अनुरोध करते हैं कि आप मुझे अपनी बर्थ दे दें। वे अच्छा चेहरा बनाते हैं और मेरी बर्थ ले लेते हैं। एक बार वयस्क मोहित

कह कर और एक बार महिला कह कर मेरी बर्थ ले लेते थे। दुर्भाग्य से, वे ऊपर नहीं चढ़ सकते, इसलिए हम उन्हें अपनी बर्थ दे देते हैं। मुझे नहीं पता कि उस समय क्या करना है, मुझे ऊपरी बर्थ पर 28 घंटे की यात्रा करनी है। अधिकांश समय, कुछ वयस्क मुझे बैठने का मौका दिए बिना निचली बर्थ पर सोते हैं। कभी-कभी मैंने अपने परिवार के साथ यात्रा करते समय में भी कई बार अपनी बर्थ बदली। मेरे माता-पिता कई बार मेरे साथ गुजरात आए। मेरे पिताजी को घुटने की समस्या थी, तो कई लोगों को मैंने निचली बर्थ मांगी, लेकिन किसी ने मुझे नहीं दी। शुरू में एक बार अपने छोटे छोटे जुड़वाँ बच्चों के साथ यात्रा कर रहा था तो निचली बर्थ नहीं मिला तो छोटे बच्चों के साथ ऊपरी/मिडिल बर्थ वाला सफर बहुत कष्ट होता था। बच्चे बहुत छोटे थे और बच्चे को सुलाने में दूध पिलाने में परेशानी होती थी। अनुरोध करने पर भी किसी ने मुझे निचली बर्थ नहीं दी। पत्नी दर्द में कहती है कि अगली बार आप भी किसी को अपनी बर्थ मत देना। उसकी हताशा देखकर मुझे लगा की कौन सही है?

(ii) कभी-कभी छोटी-मोटी घटनाएं हो जाती हैं। ऑफिस से घर जाते समय और ऑफिस आते समय भी ट्रैफिक में बहुत सारी घटनाएं हर कोई देखता है। सिग्नलों पर और विशेषकर क्रॉसिंगों पर हर कोई बीच में आ जाता है। वे इस इरादे से ट्रैफिक जाम करते हैं कि मैं आगे बढ़ जाऊं। संयोगवश, यह पंक्ति लिखने वाली शाम को मैं ऑफिस से घर जाते समय बोपल फ्लाईओवर के पास 40 मिनट तक ट्रैफिक जाम में फंसा रहा क्योंकि वन वे रूट में कुछ लोग ऑपोजिट में आ गए। अगर आप धैर्यपूर्वक एक मिनट रुकें और सामने वाले को रास्ता दें तो हर कोई आसानी से जा सकता है। उन दिनों की तुलना में अब वाहन और यातायात अधिक है। मैं 22 साल से यहाँ ट्रैफिक में गाड़ी चला रहा हूँ, ऐसे में मैं एक मिनट के लिए रुकता हूँ और उन्हें जाने देता हूँ। लेकिन आजकल की स्थिति के आधार पर वह एक मिनट कभी-कभी आपके लिए 30 मिनट का भी हो सकता है। क्योंकि हम रुक जाएंगे और बाकी सब आपको जाने दिए बिना ही चले जाएंगे। अगर यह स्थिति किसी सिग्नल के पास है तो आप पर ट्रैफिक पुलिस जुर्माना भी लगा सकती है जो मेरे साथ हुआ थी क्योंकि ट्रैफिक पुलिस को सिग्नल से मतलब है। एक बार कुछ जरूरी काम था मैं अपने परिवार के साथ कार में जा रहा था, एक क्रॉसिंग पर सिग्नल नहीं था और ट्रैफिक पुलिस भी नहीं थी। वहा सभी लोग घुसकर सब तरफ से जाते हुए देखे और मुझे लगा, ऐसे में क्या करें? क्या हमें भी ट्रैफिक जाम से बचने के लिए उसी गलत ट्रैफिक में जाना चाहिए? इतने में मेरी पत्नी जी को मेरा इरादा मालूम पड़ा तो मुझे डांटी और कही, "क्या आप इंतज़ार नहीं कर सकते?" ऐसे में क्या करें? कौन सा सही है?

(iii) उन दिनों 10वीं कक्षा में रविवार सुबह के सत्र की ट्यूशन होती थी और दोपहर के सत्र की छुट्टी होती थी। कभी-कभी मेरे माता-पिता मुझे सप्ताहांत में दोपहर को एक फिल्म देखने जाने की अनुमति दे देते हैं। हमारे गांव में उस जमाना में दो थिएटर थे। कभी-कभी दोनों थिएटरों

में अच्छी फिल्में आती हैं। एक बार मैंने रविवार सुबह के ट्यूशन क्लास छोड़ दी और अपने दोस्तों के साथ मॉर्निंग शो फिल्म देखने चला गया। अगले दिन की कक्षा में, शिक्षक ने उन लोगों से खड़े होने के लिए कहा जो कल फिल्म देखने गए थे। मुझे पसीना आ रहा था। टीचर के पूछने पर कोई नहीं उठा। टीचर ने कहा कि अगर तुम नहीं उठे तो मैं दूसरे टीचर को बुलाऊंगा, उन्होंने तुम्हें थिएटर से आते हुए देखा था। अभी उठ जाओ, यदी वह टीचर आकर दिखा देंगे तो सबकी बहुत पिटाई होगी। फिर भी कोई नहीं उठा लेकिन मैं उठ गया और मेरी हथेली उलट गई और स्केल से दो बार टकराया। अन्य लोग मारपीट से बच गए। फिर उन्होंने मेरा मज़ाक उड़ाया। कौन सही है? लेकिन जब भी हम गांव जाते हैं और उन दोस्तों से मिलते हैं तो ये सारी बातें याद कर के हंसते हैं।

उस वक्त दर्द और गुस्सा तो होता है, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, जो चीजें कभी हमें दुख पहुंचाती थीं, बहुत बड़ी समस्या लग रही थी वे हल्की हो जाती हैं। इसलिए गुस्सा या चिड़चिड़ापन आने पर अगर आप परिस्थिति से अलग हट जाएं और धैर्य रखें तो कोई परेशानी या कष्ट नहीं होगा।

ऊपर बताए गए सभी अनुभव एक प्रकार के हैं, लेकिन अब जो मैं आपके साथ साझा करने जा रहा हूं वह थोड़ी विविधता वाला है। अब मैं आपको वह बता रहा हूँ जो मैंने अपने परिवार में, रिश्तेदारों के घर में अपनी आँखों से देखा है।

कुछ परिवारों में एक बेटा और एक बेटी होते हैं। वे अपनी बेटी की शादी के बारे में बहुत सोचते हैं और परेशान हो जाते हैं। वे एक अच्छा रिश्ता देखते हैं और शादी कर देते हैं। बाद में जब बेटी अपने ससुराल जाती है तो माता-पिता बहुत दुखी होते हैं। उन्हें लगता है कि ससुराल में सभी को उनकी बेटी के साथ अच्छे संबंध रखने चाहिए। जब बेटी कहती है कि उसका पति अच्छा है और उसके साथ अच्छे संबंध रखता है तो माता-पिता अधिक खुश होंगे। लेकिन मैंने कुछ घरों में देखा है

वहीं माता-पिता उसी तरह अगर अपना बेटा बहू का ख्याल रखे तो उनको ये सहन नहीं होता, वे उन चीजों के लिए खुश नहीं हैं जो वे अपनी बेटी के बारे में खुश हैं। अपनी बेटी की तरह कल्पना नहीं कर सकते, बहू को बेटी जैसी नहीं होना चाहिए, ये भी कहा जाता है कि आखिरकार बेटा बदल गया। ये नहीं सोचते के बहू को भी उनके मां-बाप ने आपकी तरह ही सोचकर भेजा था। “क्योंकि सास भी कभी बहू थी” सीरियल सभी ने देखा और यह हिट हो गया। “बहू भी तो किसी और की बेटी है” नाम से कोई और नया धारावाहिक नहीं आ सकते? बेटी के लिए एक न्याय और बहू के लिए दूसरा न्याय है। ये कैसा न्याय है? ऐसे में, माता-पिता और पत्नी के बीच संतुलन बनाकर जाते समय बेटा दबाव से कुचला जाता है। क्योंकि वह किसी को भी नहीं छोड़ सकता, दोनों उसके हैं। यदि सभी लोग इस बात का ध्यान रखें और आचरण करें तो किसी भी घर में कोई समस्या नहीं होगी जब हम हर दिन ऐसी घटनाएं देखते हैं तो हमें लगता है कि क्या सही है? कौन सही है? जो सही है वही सही है जिसने अच्छा काम किया है।

संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह 2024 की कुछ और झलकियाँ



संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह 2024 के दौरान मुख्य अतिथि कवयित्री मंजू महिमा महोदया द्वारा स्वरचित रचना कार्यालय को प्रेषित करते हुए



संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह 2024 के दौरान प्रतियोगिता में भाग लेते हुए कार्मिक

सादगी बिना, महानता नहीं

"व्यक्ति की महानता उसके कपड़ों/धन से नहीं बल्कि उसकी सादगी से आंकी जाती है"

मोहित कुमार सुधांशु

स.ले.प.अ.

यह कथन अपने आप में अर्थ को स्पष्ट करता है कि सादगी का व्यक्ति के जीवन में क्या महत्व है, एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का निरीक्षण करते समय उसके पास एकत्रित धन संपत्ति व उसके पहनावे से उसकी महानता का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता बल्कि उसका सादगी पूर्ण जीवनशैली ही उसके व्यक्तित्व का वास्तविक मानक होता है। पूरे विश्व भर में सबसे बड़े लोकतंत्र के राष्ट्रपति होने के बावजूद भी डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की सादगी पूर्ण जीवन शैली की वजह से, आज सभी भारतवासी और यहां तक की विश्व भर में अधिकतर लोगों के दिलों में जगह बनाए हुए हैं, यह उदाहरण चरितार्थ है कि सादगी, महानता को प्राप्त करने का एक साधन है।

इतिहास में शुरुआत से आज तक संस्कृति और सभ्यताएँ अलग अलग रूप में हमारे समक्ष है, तथा पहचान और विविधताओं को नया आयाम दिया है, लेकिन इन सबके बीच सादगी व महानता में एक अनन्य संबंध रहा है।

महानता का सादगी के साथ संबंध केवल युगों तक ही नहीं बल्कि जीवन के सभी क्षेत्र चाहे वह तकनीक हो या विज्ञान, समाजशास्त्र हो या राजनीति में देखा जा सकता है। यहां तक की भारत व विश्व के महान चिंतक कबीर दास, मीराबाई, रबीन्द्रनाथ टैगोर, सुकरात और रूसो आदि अपना जीवन सादगी से व्यतीत करते थे, इसी वजह से विश्वभर में आज भी लोग उनके शिक्षा/ज्ञान का अनुकरण करते हैं, यही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को महान बनाता है। सभ्यताओं के प्रारंभ प्राचीन काल, मध्यकाल यहां तक की आधुनिक काल में भी सादगी व महानता के साथ सम्बंध देख सकते हैं।

उपरोक्त चर्चा के बाद यह जानना जरूरी हो जाता है, कि सादगी क्या है ? महानता का क्या मतलब है ? सादगी व महानता में क्या संबंध है ? सादगी को कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? अगर सादगी ना हो तो जीवन कैसा होगा ? इत्यादि...

सादगी एक जीवन जीने का तरीका है जो हमारे विचारों, कार्यों व व्यक्तित्व में दिखती है । प्राचीन समय में बुद्ध का अपने पारिवारिक व समृद्ध जीवन को छोड़कर सत्य की खोज के लिए निकलना, उनकी सादगी को दर्शाता है, और मध्यकाल में गुरुनानक का अपनी संपूर्ण जिन्दगी मानव सेवा को समर्पित कर देना, जीवन में सादगी को दर्शाता है । तथा अपने समय के महान नेता व अपनी सादगी के लिए जाने जाने वाले लाल बहादुर शास्त्री जी आज भी लोगो के मन में एक विशेष स्थान रखते हैं, जो सादगी की महत्वता को दर्शाता है।

वहीं दूसरी ओर अगर महानता की बात करें तो वह सादगी से प्राप्त होने वाला परिणाम है, अगर सादगी साधन है, तो महानता साध्य है । यहां पर महान दार्शनिक सुकरात का एक कथन प्रासंगिक है - "मैं ज्ञानी इस अर्थ में हूं कि यह जानता हूं कि मैं कुछ नहीं जानता"

अगर दूसरा नजरिया देखा जाये तो सादगी एक ऐसा यंत्र है, जो सहिष्णुता, उदारता, अहिंसा, विनम्रता जैसे गुण को पैदा करती है, और कठिन परिस्थितियों को भी सरल बना देता है । उदाहरणार्थ- डॉ बी.आर. आंबेडकर का समृद्ध जीवन छोड़, अपना संपूर्ण जीवन महिलाओ और दलितों को अधिकार दिलाने में लगा देना, जिससे आज संपूर्ण विश्व उन्हें एक महान व्यक्ति के रूप में जानता है ।

वहीं कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने न केवल सादगी को अपने जीवन में बनाए रखा बल्कि उसे बड़े स्तर पर उसका प्रचार भी किया जैसे- गाँधी जी की अहिंसा नीति, जिसको उन्होंने अपने जीवन के साथ साथ बाकी लोगो को भी अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया । आज विश्व उन्हें हिंसा व सत्याग्रह के पुजारी के रूप में याद करता है । गांधी जी ने कहा है कि व्यक्ति की सबसे बड़ी महानता समाज के प्रति

समर्पण से सेवा में है। उन्हीं से प्रेरणा लेकर स्वतंत्रता संग्रामियों (मार्टिन लूथर किंग) ने अपने राष्ट्र में स्वतंत्रता संग्राम को छोड़ दिया था और एक सादगी पूर्ण तरीके से रंगभेद, भेदभाव व शोषणकारी नीतियों को समाप्त किया।

सामाजिक स्तर पर सादगी एक अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करती है और समाजीकरण को आसान बना देती है, इससे समाज में भाईचारा, सहानुभूति और समर्पण जैसे मूल्य जन्म लेते हैं जैसे रतन टाटा का राष्ट्र के प्रति समर्पण व कैलाश सत्यार्थी का बच्चों के विकास में योगदान सादगीपूर्ण जीवनशैली प्रदर्शित करता है।

सादगी पूर्ण जीवन केवल समाज में नहीं बल्कि राजनीति अर्थशास्त्र व जीवन के सभी क्षेत्रों में अपना योगदान देता है लोकतंत्र को बढ़ाने सुशासन, नैतिक शासन व सिद्धांतों के अनुरूप चलने के लिए सादगी जरूरी है ख्यातिप्राप्त डॉ अब्दुल कलाम व अब्राहम लिंकन का अपने देश के प्रति समर्पण उनके सादगी पूर्ण जीवन को चरितार्थ करता है।

आज के समय में विश्वभर की सबसे बड़ी समस्या जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए भी सादगी एक अच्छा यन्त्र है, जो संपूर्ण विश्व को जलवायु परिवर्तन के भयानक नतीजे से बचा सकती है। जैसे देश के नागरिकों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाकर व एक अच्छा जीवन प्रदान कर नॉर्वे, डेनमार्क, स्वीडन जैसे देश अधिकतर वैश्विक सूचकांक में उच्च स्तर पर है।

सादगीपूर्ण जीवन शैली, व्यक्तिगत जीवन में भी संबंध को बेहतर बनाती है, सभी वर्गों (विशेषतः महिलाओं) को समान अधिकार, समाज व राष्ट्र को और भी अधिक शक्तिशाली और महान बनाता है। और समाज को और भी संवेदनशील बनाता है, जो राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाता है।

उपरोक्त चर्चा से यह तो सिद्ध होता है कि सादगी से मानवता को प्राप्त किया जा सकता है, हालांकि यह जानना भी आवश्यक है की सादगी ना हो तो फिर क्या होगा ?

सादगी के अभाव में समाज में असहिष्णुता, अराजकता, व्यक्तिवाद, महिलाओं का वास्तुकरण इत्यादि को बढ़ावा मिलता है आज वैश्विक स्तर पर बढ़ता भ्रष्टाचार, महिलाओं के प्रति अपराध, चोरी-चकारी, धर्म के नाम पर मोब लीचिंग, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, मनुष्य का सादगी रहित जीवन शैली का ही परिणाम है । इतना ही नहीं विभिन्न प्रकार के घोटाले, भ्रष्टाचार, अवैध खनन इत्यादियों का बढ़ना हमारी बिना मतलब जरूरत व लालच का ही परिणाम है ।

इसी प्रकार आज बदलते तकनीकी युग में व्यक्ति सोशल मीडिया पर कृत्रिम दिखावा करने के लिए लाखों के मोबाइल, नाइकी के जूते और अरमानी के शर्ट पहन रहा है । वैश्वीकरण के इस युग में व्यक्ति की महानता उसकी सादगी से नहीं बल्कि उसकी धन दौलत, बंगला गाड़ी, पहनने के तरीके आदि से आंकी जाती है, उपरोक्त चर्चा के बाद यह विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है कि कैसे हम सादगी में महानता के उच्चतम स्तर को प्राप्त करें ?

सादगी व महानता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सादगी को प्राप्त करने के लिए हमें अलग-अलग स्तरों पर कार्य करने होंगे तभी हम महानता को प्राप्त कर सकते हैं । जैसे - महिलाओं को समान अधिकार देना, बेहतर राष्ट्रीय निर्माण में हमारी मदद कर सकता है। डॉ बी आर अंबेडकर जी का कथन "मैं किसी समाज की प्रगति उस समाज में महिलाओं की प्रगति से आँकता हूँ" इस बात को चरितार्थ करता है कि महिलाओं का राष्ट्रीय निर्माण में क्या भूमिका है। हमें व्यक्तिगत स्तर पर अपने विचारों व कार्यों में सादगी को अपनाने की आवश्यकता है। समाज के स्तर पर सहिष्णुता, सौहार्द भावना, भाईचारा के साथ समावेशी विकास व जलवायु परिवर्तन से बचने के लिए सतत विकास की अवधारणा आवश्यक है जिससे राजनीतिक व आर्थिक जगत में सादगी को अपना कर एक राष्ट्र वैश्विक स्तर पर अद्वितीय (महान) स्थान प्राप्त कर सकता है ।

अहमदाबाद का ऐतिहासिक एलिसब्रिज (स्वामी विवेकानंद ब्रिज)

रीना अभ्यंकर
प्रयवेक्षक

जब मैं छोटी थी, अहमदाबाद के पुराने शहर विस्तार (old city) में रहती थी। उस जमाने में अहमदाबाद का विस्तृत नहीं था। कभी कभी पुल क्रॉस कर के शहर के नए विकसित स्थान में रहते रिशतेदारों के घर आना जाना पड़ता था। तब एलिसब्रिज से गुजर कर जाना पड़ता था। 1892 में बना यह पुल पुराने और नये अहमदाबाद को जोड़ता है। 131 साल बाद आज भी एलिसब्रिज यथास्थिति खड़ा है।

बचपन में हम अज्ञानता में एलिसब्रिज को एलिसब्रिज का पुल कहा करते थे। जैसे- जैसे समय बीतता गया, यह बदतर होता गया। वह अपने अनुमानित जीवनकाल से अधिक समय तक जीवित रहा। फिर उस पुल के बगल में विवेकानंद पुल बनाया गया। इस नए पुल को बनाने में 18 करोड़ रुपये की लागत आई थी और उद्घाटन से पहले इसे टूटने से बचाने के लिए एहतियात के तौर पर 5 करोड़ रुपये का बीमा कराया गया था। अनुमान लगाया जाता है कि नये पुल का नाम विवेकानंद ब्रिज रखा गया है और जैसा कि हम जानते हैं कि स्वामी विवेकानंद का जीवन छोटा था।

कुछ साल पहले, इस बेहद मूल्यवान एलिसपुल को अहमदाबाद नगर निगम ने कबाड़ में बेच दिया था। लेकिन जब इस बात का पता इस शहर अहमदाबाद के संवेदनशील लोगों को चला तो उन्होंने निगम पर हमला बोल दिया और उनसे पूछा कि आपकी आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर हो गई है, इतने बुरे दिन आ गए हैं कि आप इस पुल को कबाड़ के भाव बेच रहे हैं? क्या हम इसे मेहतर को दे दें? आपको शर्म आनी चाहिए। निगम को बहुत देर से पता चला कि जिस पुल को हम कबाड़ में बेचने जा रहे थे, वह शहर का एक ऐतिहासिक टुकड़ा है। एक प्राचीन टुकड़ा है, इसका बहुत बड़ा 'विरासत मूल्य' है और शर्मिंदा हो कर निगम ने पुल बेचने का विचार त्याग दिया। आज एलिसदादा, विवेकानंद पुल के बगल में खड़े हैं। एलिस पुल को वाहन व्यवहार हेतु बंद कर दिया गया है। इस पुल की देखभाल के लिए, इसके रख- रखाव के लिए पांच करोड़ रुपये दिए गए हैं।

एलिसब्रिज के अतीत पर एक नजर डालते हैं-

ब्रिटिश इंजीनियरों ने एलिसब्रिज के निर्माण की अनुमानित लागत साढ़े चार लाख रुपये आंकी थी। इसके विरोध में अहमदाबाद के लाखा पटेल की पोल की देवानी स्ट्रीट पर रहने वाले हिम्मतलाल धीरजराम

इंजीनियर (असली नाम भचेच) नामक सहायक अभियंता ने कहा कि जाओ, जाओ मेरे भाई. इतना खर्च होता होगा? अनुमान बढ़ा-चढ़ाकर बताए गए हैं, "यदि आप इसे इससे कम में बनाना चाहते हैं, तो आगे बढ़ें और इसे स्वयं बनाएं।" ऐसी चुनौती देने के बाद हिम्मतलाल ने बहादुरी से चुनौती स्वीकार कर ली। उसने नदी की रेत में एक झोपड़ी बनाई और वहीं अपना भोजन और रहने का प्रबंध किया। 24 घंटे, सोते और जागते पुल पर निगरानी रखें। पुल के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। उन्होंने पुलों के निर्माण के लिए आवश्यक कच्चे माल में समर्पण और ईमानदारी को भी शामिल किया। कोई और अष्ट इंजीनियर होता तो इस पुल के बगल की जमीन पर अपनी आलीशान महल जैसी इमारत खड़ी करने लगता, लेकिन हिम्मतलाल को इस बात का ख्याल रहता कि उसके खाने में सरकारी रेत न मिले. एक बार, उनकी जानकारी के बिना, उनकी पत्नी ने दिवाली पर बर्तन साफ करने के लिए रेत की एक बाल्टी मंगवाई। इस रेत के बारे में जानकर उसने अपनी पत्नी की धूल हटा दी यह रेत हमारी नहीं है, सरकार की है और इसे वापस ले आया।

हिम्मत भाई ने तय समय सीमा के अंदर पुल तैयार कर दिया। विदेशी इंजीनियरों ने साढ़े चार लाख रुपए का एस्टीमेट दिया, जिसे हिम्मतलाल ने ढाई लाख में तैयार किया। यदि लागत इंजीनियरों द्वारा दिए गए अनुमान से अधिक होती तो भ्रष्टाचार के आरोप लगते, लेकिन लगभग आधी लागत पर पुल तैयार होने के बावजूद पुल की मजबूती के साथ छेड़छाड़ की गई होगी। हिम्मतभाई के खिलाफ एक जांच समिति गठित की गई। (ईमानदारी को कभी-कभी पुरस्कृत किया जाता है)। जांच कमेटी ने पुल के एक-एक पिलर, ज्वाइंट, आर्च आदि की बारीकी से जांच की। फिर रिपोर्ट दी कि इसमें कोई कन्फ्यूजन नहीं है। यह पुल बेहद मजबूत और खूबसूरत है। इससे सरकार खुश हो गई। संतुष्ट होकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें हिम्मतलाल से "राव बहादुर हिम्मतलाल धीरजराम" बना दिया। कहानी का अंत इस इल्काब को अपने सीने पर लटकाओ और घूमो।

जिस समय यह पुल बना उस समय अहमदाबाद के कलेक्टर का नाम ऐलिस था। इस हिम्मतपुल का नाम ऐलिस के साथ मिलकर एलिसब्रिज हो गया। ऐलिस मुफ्त में नाम का हीरो बन गया। लेकिन आज, अगर हिम्मतलाल का नाम ढूंढना है. तो एलिसब्रिज के अंत में एक नामपट्ट में उनका नाम मिलेगा।

एक और हमारी सरकार ब्रिटिश सरकार के जाने के बाद आई, जब से आई तब से गरीब थी। उससे कुछ भी नहीं पूछा जा सका। हिम्मतलाल

धीरजराम के उत्तराधिकारियों को इसकी जानकारी नहीं थी, इसलिए उन्होंने अहमदाबाद नगर निगम से बार-बार अनुरोध किया कि कृपया टाउन हॉल से एलिसब्रिज के पश्चिमी छोर तक की सड़क का नाम 'इंजीनियर श्री हिम्मतलाल धीरजराम मार्ग' रखा जाए, तभी यह पुल हमारा और अहमदाबाद शहर की विरासत माना जाएगा। हमने सही मायने में पितृतर्पण किया ऐसा हमें महसूस होगा। इतने सारे अनुरोधों के बाद, अहमदाबाद नगर निगम ने अनुकंपा के आधार पर 15-05-1979 को सड़क का नाम स्वीकृत किया। इतनी छोटी सी मुफ्त चीज़ के लिए हिम्मतलाल इंजीनियर के परिवार को अहमदाबाद नगर निगम से अनेक बार अनुरोध करना पड़ा।

भले ही हम अंग्रेजों को डांटें, लेकिन अगर उन्हें लगे कि यह देना चाहिए तो वे बिना किसी हिचकिचाहट के प्यार और उदारता से देते थे। उदाहरण के लिए, हिम्मतलाल को एलिसब्रिज के निर्माण जैसा सराहनीय कार्य करने के लिए 'रावबहादुर' का सम्मान पाने के लिए बड़े लोगों की मित्रता या सिफ़ारिश पत्र पेश नहीं करना पड़ा था। 3 जून, 1893 को, उन्हें वायसराय (और भारत के गवर्नर जनरल इस प्रकार दोनों एक साथ) द्वारा राव बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया गया था। इस सनद की मूल प्रति हमें हिम्मतलाल की पुत्रवधू श्रीमती वन्दनाबहन इंजीनियर के पास देखने मिली। अंग्रेजी सरकार के सिक्कों की मुहर और गवर्नर के हस्ताक्षर वाले औपचारिक प्रमाणपत्र, ठीक उसी तरह जैसे किसी छात्र को विश्वविद्यालय से विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण होने पर दिया जाने वाला प्रमाणपत्र। इसके साथ सवा रुपये का शगुन भी नहीं दिया गया। सिर्फ़ प्रमाणपत्र। सरकार की जगह अगर किसी छोटी रियासत का राजा होता तो हिम्मतलाल को खुशी-खुशी दो-तीन गांव दे देता। लेकिन हिम्मतलाल की जैसी किस्मत !

जैसा कि हिम्मतलाल को बार-बार बताया गया कि सरकार उनके काम से बहुत खुश है, उन्होंने सरकार से कहा कि यदि ब्रिटिश सरकार वास्तव में मुझसे खुश है, तो मुझे पांच हजार रुपये प्रति माह की पेंशन दे दें। उनकी भावनाओं और मांगों के जवाब में कई अधिकारियों ने कागज पर उनके काम की सराहना की और कहा, "हिम्मतलाल की कुशल देखरेख और मितव्ययी स्वभाव के कारण ही सरकार को दो लाख रुपये के अलावा एक लाख सत्रह हजार एक सौ चौवन रुपये की बचत हुई है।" सरकार ने उनसे यह भी कहा कि आप जैसा ईमानदार आदमी अहमदाबाद में नहीं है। सरकार आपकी लंबी, मूल्यवान सेवा

की सराहना करती है, लेकिन आपको और कुछ नहीं दिया जा सकता। पांच हजार रुपये का पेंशन भी नहीं। ब्रिटिश सरकार से ज्यादा तो हमारी अहमदाबाद नगर पालिका उदार साबित हुई जो हिम्मतलाल द्वारा बनाए गए पुल के रखरखाव, देखरेख और मरम्मत पर पांच करोड़ रुपये खर्च कर रहा है। हिम्मतलाल जहां भी होंगे, इस बात से संतुष्ट होंगे कि मैं नहीं तो मेरे पिय पुल को जो मिला उससे मैं बहुत खुश हूं। सत्यापन हेतु लेखक श्री विनोद भट्ट लिखित पुस्तक, "माउं वहातुं अमहावाह" को रिफर किया गया है।



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा समारोह 2024 के अवसर कार्यालय के प्रमुख एवं कार्मिक

जल संरक्षण

विद्या अय्यर
पर्यवेक्षक

जल ही जीवन है। पृथ्वी पर जल के बिना जीवन संभव नहीं है। व्यस्क मनुष्य का शरीर 65% पानी से है। पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जल जैसे प्राकृतिक संसाधन का बचाव और बना हुआ है संरक्षण बहुत ही जरूरी है। कई अलग-अलग तरीकों से जल का संग्रह करना और जल को प्रदूषित न होने देना, इसी को ही जल संरक्षण कहते हैं। अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि ने हमारे देश में कई समस्याओं को न्योता दिया है। उसमें से एक समस्या जल संरक्षण की है। देश के लोगों में सतर्कता का काफी हद तक अभाव है। इसलिए तो जल का बहुत दुरुपयोग कई सालों से हो रहा है। जल का यह दुरुपयोग अगर निरंतर चालू रहा तो पृथ्वी पर जल की कमी से बहुत भारी संकट आने वाला है। जल के नैसर्गिक स्रोत जैसे की भूगर्भ जल, नदियां, तालाब कुए को बहुत भारी मात्रा में प्रदूषित किया जा रहा है। मानवी एवं अन्य जीवों को शुद्ध जल पर्याप्त नहीं होगा। इसकी वजह से समय जीव सृष्टि में बहुत सारे रोग अपना सीर, बहुत तेजी से उठा रहे हैं। इसलिए तो जल का संरक्षण करना बहुत जरूरी है। सरकार एवं अन्य एजेंसी जल संरक्षण के लिए बहुत प्रयास कर रही हैं। हमें व्यक्तिगत रूप से इन प्रयासों में सहयोग देना बहुत जरूरी है। इससे ही मनुष्य तथा अन्य सजीवों का जीवन स्वस्थ एवं सुखमय बन सकता है। जल संरक्षण करने के जरूरी तरीकों की ओर हमारी समझ, जानकारी, सतर्कता होना बहुत जरूरी है। तभी हम जल संरक्षण की समस्या को आसानी से हल कर सकेंगे।

जल संरक्षण के कई उपाय हैं जैसे की अपने घरों में बिजली की तरह पानी के मीटर लगाने होंगे, तब पानी खर्च करने से पहले लोग 100 बार सोचेंगे। पानी के नलों एवं पाइपलाइन में कोई लीकेज होना नहीं चाहिए उसकी मरम्मत, शीघ्र करवानी चाहिए। गाड़ी को धोने के लिए पाइप की जगह बाल्टी और मग इस्तेमाल करें। जगह-जगह पर सूखा अवरोधी पौधे लगाना बहुत जरूरी है। वर्षा के जल को व्यर्थ बहने देना

नहीं चाहिए 1. वर्षा के जल को संग्रह करने के लिए छोटे-छोटे जलाशय का निर्माण करना चाहिए। घरों में वाटर हार्वेस्टिंग टैंकिया बनाए। बहुत सारे लोग अनावश्यक वस्तुएं जल में फेंक कर जल को प्रदूषित करते हैं, इसे रोकना बहुत जरूरी है। औद्योगिक कचरा नदी, तालाब, भूगर्भ में छोड़कर जल को प्रदूषित किया जाता है, जो शीघ्र ही बंद करवाना बहुत जरूरी है।

चलो, हम सब साथ मिलकर जल संरक्षण के लिए अपने प्रयास खुद से शुरू करें और यह संदेश सब लोगों तक पहुंचाएं और जल संरक्षण का कार्य सफलतापूर्वक बड़ी तेजी से हम लोग साथ मिलकर करना शुरू कर दे। जल ही जीवन है। जल संरक्षण मेरा संदेश है।



योग दिवस पर योगाभ्यास कराते हुए योग प्रशिक्षिका

शिव

विद्या अघ्यर
पर्यवेक्षक

तुम हो अनादि तुम हो अनंत,
तुम हो हर पीड़ा संकट के अंत ।
तुम ही भोलेनाथ, शंभू त्रिपुरारी,
तुम ही मैं लय यह सृष्टि सारी ।
तुम ही उमापति गण नायक,
तुम ही हो शंकर सब सुखदायक ।
तुम हो देवों के देव महादेव,
तुम को अर्पित भांग, धतूरा बिल्व ।
शीश घर शशांक, तुमने पिया हलाहल ।
तुम्हारी जटाओं में गंगा करती कोलाहल ।
नश्वर जगत के तुम आधार,
तुम ही जग के पालनहर ।
कंठ विराजत विषधर भुजंग,
भूत पिशाच भी तेरे संग ।
तुमको नवाऊं मैं निशिदिन शीश,
कृपा पाऊँ सब तेरी हे जगदीश ।

सर्वोत्तम चाल ढूँढ़ें

हरिषित पाण्डेय
स.ले.प.अ.

शतरंज के खेल में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए एक पहेली प्रस्तुत है। नीचे दर्शायी गई बोर्ड की पोज़ीशन का अवलोकन करें एवं उक्त पोज़ीशन में ब्लैक के लिए सर्वोत्तम मूव निर्धारित करें।



उत्तर जानने हेतु पृष्ठ पलटें। पिछले पृष्ठ पर दर्शायी गई बोर्ड की एण्डगेम पोज़ीशन के विश्लेषण से पता चलता है कि उक्त पोज़ीशन में ब्लैक की स्थिति अत्यंत कमज़ोर है। ब्लैक न केवल दो पॉन्स से पीछे है बल्कि उसका किंग भी बोर्ड के एकदम कोने में पड़ा है तथा अपने एकमात्र h पॉन को सपोर्ट कर पाने से कोसों दूर है। इसके विपरीत व्हाइट की स्थिति अत्यंत मजबूत कही जा सकती है क्योंकि न केवल वह दो पॉन्स की लीड पर है बल्कि उसका किंग भी अपने तीनों पॉन्स को सपोर्ट करने की स्थिति में है। ऐसे में व्हाइट यदि क्वींस एक्सचेंज कर पाने में सफल रहता है तो व्हाइट के पॉन्स अपने किंग के सपोर्ट के साथ आठवीं रैंक में पहुंचकर क्वीन प्रमोट हो पाने में निश्चित ही सफल रहेंगे। उक्त स्थिति में ब्लैक के लिए गेम जीत पाना असंभव है।

हालांकि उपर्युक्त आशाहीन स्थिति में ब्लैक एक ऐसा मूव चल सकता है जिससे वो इस लगभग हारे हुए गेम को ड्रा कर ले और ब्लैक के लिए गेम को ड्रा करने वाला यह मूव होगा -



ऐसा करने के बाद व्हाइट के पास $Q \times c7$ का मूव ही एकमात्र विकल्प रह जाएगा क्योंकि इसके अतिरिक्त अन्य सभी लीगल मूव्स के परिणामस्वरूप उसे अपनी क्वीन तथा गेम गंवाना पड़ेगा।

व्हाइट के $Q \times c7$ मूव के बाद गेम स्टेलेमेट के रूप में ड्रॉ के साथ समाप्त होगा क्योंकि इसके पश्चात ब्लैक के पास कोई लीगल मूव नहीं रह जाएगा।



प्रायः ऐसा होता है कि जिसे हम एक समय जीवन की सफलता समझ बैठते हैं, कालान्तर के साथ वह मात्र एक पड़ाव की तरह लगने लगता है और सफलता हमें वह संतोष नहीं दे पाती है जिसकी अपेक्षा हम कर रहे होते हैं। इसलिए हमें हमेशा बेहतर की तलाश में रहना चाहिए और इससे भी बेहतर करना चाहिए। बेहतर की तलाश में रहना काफी सीमा तक सही भी है क्योंकि यदि हम संतुष्ट हो जाएंगे तो सुधार की आवश्यकता हमें नज़र ही नहीं आएगी। हमारा विकास स्थिर हो जाएगा। यहाँ विकास से तात्पर्य केवल वित्तीय विकास से नहीं है बल्कि आंतरिक विकास से भी है। संभव है आज हम जो है भविष्य में उससे अच्छी या बेहतर स्थिति में हों इसलिए हमें हमेशा कुछ न कुछ बेहतर की तलाश करनी चाहिए। जो लोग बड़े सपने देखते हैं, अपने सपनों के पीछे भागते रहते हैं और वे उन सपनों पूरा भी कर लेते हैं। एक बार पूरा करने के बाद वे और भी बड़े सपने बुनते हैं और फिर से उनको पूरा करने में जुट जाते हैं क्योंकि वे और भी बेहतर करना चाहते हैं।

बेहतर बनने का प्रयास भी इस तथ्य को स्वीकार करता है कि सुधार की गुंजाइश हमेशा रहती है। बेहतर बनने की महत्वाकांक्षा या तलाश एक मंजिल के बजाय एक यात्रा है। यह एक सतत प्रक्रिया है जिसके लिए निरंतर आत्म-चिंतन, विकास और परिवर्तन की आवश्यकता होती है। बेहतर बनने के प्रयास की खूबसूरती यह है कि काम करने के लिए हमेशा कुछ न कुछ होता है, चाहे वह जीवन का व्यक्तिगत या व्यावसायिक पहलू हो। बेहतर बनने पर ध्यान केंद्रित करके व्यक्ति बदलती परिस्थितियों के अनुरूप ढल सकता है और लगातार विकसित हो रही दुनिया में प्रासंगिक और सार्थक बने रह सकता है।

जो व्यक्ति बेहतर बनने पर ध्यान केंद्रित करते हैं उनमें विकास की मानसिकता होने की संभावना अधिक होती है। वे समझते हैं कि सफलता और असफलताएं सीखने और विकास के अवसर हैं। बेहतर बनने पर ध्यान केंद्रित करके व्यक्ति पूर्ण और सार्थक जीवन जीने के लिए आवश्यक कौशल और गुण विकसित कर सकते हैं। आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में हम

इतने व्यस्त हो गए हैं कि हमारे पास हमारे लिए ही समय नहीं है। हम यदि सोचकर देखें कि हम अपनी दिनचर्या में से कितने घंटे स्वयं के लिए निकाल पाते हैं। बेहतर करने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि हम स्वयं पर काम करें, हमारी कमियों और खूबियों को पहचानें और उनका मूल्यांकन करें। हमारे अंदर क्या विशेष प्रतिभा है जिससे हम बेहतर कर सकते हैं।

यदि संतुष्टि और खुशी स्थायी होती, तो आगे लाभ या प्रगति की तलाश जारी रखने के लिए थोड़ा प्रोत्साहन हो सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो संतुष्ट महसूस करना व्यक्ति के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि इससे मनुष्य का बाह्य विकास तो थम ही जाएगा साथ ही आंतरिक विकास भी प्रभावित होगा। एक सूफी कहावत है “ खुद को बेहतर बनाना ही, बेहतर गांव, बेहतर शहर, बेहतर देश, बेहतर दुनिया बनाने की ओर पहला कदम होता है। ”

आज का युवा वर्ग अन्य बातों में तो बहुत ही आधुनिक हो गया है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वह अभी भी अपने भविष्य के बारे में संकुचित दृष्टिकोण रखता है। हर दिन अवसर बढ़ते जा रहे हैं। वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्रों में हमारा देश आशातीत प्रगति कर रहा है। ऐसे में हमें भी स्वयं को बेहतर बनाना चाहिए.. बेहतर सोचना ही बेहतर बनने की तलाश में पहला कदम है। अतः इसका मतलब यह हुआ कि अगर हम सचमुच बड़ा सोचते हैं तो हमारे सामने बहुत कम प्रतियोगिता है और हमारे लिए एक बहुत बड़े करियर का रास्ता खुला हुआ है। यदि हम देखें तो पाएंगे कि आज जितने भी सफल लोग हैं यदि वे कुछ बेहतर करने का नहीं सोचते या जिस स्थिति में वे पहले थे उससे ही संतुष्टि प्राप्त कर लेते, तो शायद आज इस मंजिल पर नहीं पहुंच पाते।.. बड़े चिंतक केवल यही नहीं देखते कि वे वर्तमान में क्या हैं, वे यह भी देख सकते हैं कि इससे बेहतर क्या हो सकता है।.. जहां आज कुछ नहीं, वहां कल क्या हो सकता है, इस बात की कल्पना करना हमें सीखना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्तमान में चीज़ें कैसी हैं, यह देखने के तुलना में यह देखें कि वे भविष्य में कैसी हो सकती हैं। कल्पनाशक्ति से हर वस्तु ज्यादा कीमती बन जाती है। बड़ा चिंतक सदैव इस बात की कल्पना कर लेता है कि भविष्य में क्या किया जा सकता है। वह केवल वर्तमान में ही नहीं उलझा रहता, बेहतर की तलाश में अपने प्रयास हमेशा जारी रखता है।..

हमारे पास क्या नहीं है, यह महत्वपूर्ण नहीं होता। इसकी अपेक्षा यह महत्वपूर्ण होता है कि हमारे पास भविष्य में क्या होगा। यहां यह महत्वपूर्ण है कि हम किस तरह अपने भविष्य की शक्ति को विकसित कर सकते हैं, अर्थात् हम अपनी संभावनाओं को किस तरह देख सकते हैं। जब हम सफलता की दुनिया में ऊपर और ऊपर जाएंगे तो हम स्वयं का विकास करने की तरफ अग्रसर होंगे। सदैव इस बात पर विचार किया जाए कि हम स्वयं को और बेहतर कैसे बना सकते हैं। स्वयं के मूल्य को बढ़ाने का अभ्यास किया जाना चाहिए। अपने मूल्य की कल्पना अपने वर्तमान से न करें, इस बात से न करें कि हम आज क्या हैं, बल्कि अपने मूल्य की कल्पना अपने भविष्य से करें, इस बात से करें कि हम क्या बन सकते हैं। फिर उस संभावित मूल्य को हासिल करने के तरीके स्वतः ही हमारे मन-मस्तिष्क में आ जाएंगे और हम उन मूल्यों को हासिल करने में जुट जाएंगे। अपने गुणों, अपनी योग्यताओं पर ध्यान केंद्रित करें। यह जान लें, हम जितना समझते हैं, हम उससे कहीं बेहतर हैं। अपनी दृष्टि को विस्तार दें। केवल यह न देखें कि क्या है, अपितु यह भी देखें कि क्या हो सकता है।

एक आम व्यक्ति कोई भी बड़ा काम करने से पहले डर जाता है। यह डर उसे कोई भी नया काम शुरू करने नहीं देता है। उसके पास जितना है, उतने में ही संतुष्ट हो जाता है। वह जीवन में जोखिम उठाने से डरता है। वह हार-जीत के बीच की कड़ी से डरता है। एक बेहतर और सफल मनुष्य बनने के लिए सबसे पहले अपनी सोच पर विजय हासिल करना सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। यदि मनुष्य में अपने सपनों को पूरा करने का दृढ़ विश्वास होगा तो वह अवश्य ही अपने सपनों को पूरा करने में सफल हो सकता है। एक बेहतर और सफल जीवन पाने के लिए मनुष्य को अपने आत्मविश्वास के साथ-साथ अपनी सकारात्मक सोच पर भी काम करने की जरूरत है। हमारी बेहतर बनने की सोच हमको बेहतर ज़िंदगी देने में पूरी मदद करती है। बेहतर और सकारात्मक सोच से अपने लक्ष्य को पाना और सपनों को साकार करना आसान हो जाता है। बेहतर बनने की सोच हमको जीवन में वह सब कुछ दिला सकती है, जिसके हम सभी सपने देखते हैं।

महात्मा बुद्ध ने कहा था कि "आज आप जो हैं, वह अपने कल के विचारों और निर्णय के कारण हैं। और कल जो होंगे वह आज के विचारों

और निर्णय के अनुरूप होंगे।" एक श्रेष्ठ इंसान बनने की महत्वाकांक्षा हर व्यक्ति की होती है परन्तु जीवन में कई ऐसे मोड़ आते हैं कि व्यक्ति स्वयं की बेहतरी पर ध्यान नहीं दे पाता है। यदि हम स्वयं को एक बेहतर व्यक्ति बनाना चाहते हैं तो हमको इसके लिए हमेशा कोशिश करते रहना चाहिए, तभी हम खुश रह सकते हैं और एक बेहतर इंसान भी बन सकते हैं। एक व्यक्ति तब ही बेहतर बन सकता है जब वह अपने लक्ष्य का निर्धारण करें और उसे पाने की कोशिश करें। क्योंकि किसी को भी उसके लक्ष्य को पाने की चाहत और किए गए प्रयास ही उसे बेहतर बनाते हैं साथ ही सफलता दिलवाने में उसकी मदद करते हैं। स्वयं पर विश्वास करने से व्यक्ति का अत्मविश्वास बढ़ता है और आत्मविश्वास व्यक्ति को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।..

नई चुनौतियां लेने का मतलब है ऐसा कुछ करना जो पहले कभी नहीं किया हो और हम उसे कर सकते हैं परन्तु उसको करने से डर या जोखिम लगता है।.. जीवन में जोखिम लेना बहुत जरूरी होता है क्योंकि ऐसा करने से या तो हम सफल होंगे या फिर असफल होंगे।.. यदि हम सफल होते हैं तो हमको खुशी होगी और यदि हम असफल होते हैं तो हमको असफलता से भी एक सीख मिलेगी।.

एक बेहतर इंसान बनना हर व्यक्ति की इच्छा हो सकती है। हर कोई चाहता है कि वह दुनिया का सबसे बेहतर इन्सान बने। हालांकि जीवन के उतार-चढ़ाव के कारण ऐसा करना थोड़ा मुश्किल होता है परन्तु असंभव नहीं है। व्यक्तित्व के साथ ही शरीर भी हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। इसलिए अपने शरीर की भी अच्छी प्रकार से देखभाल की जानी चाहिए और इसे स्वस्थ रखा जाना चाहिए। स्वस्थ शरीर हमको बेहतर एवं श्रेष्ठ बनाने में हमेशा हमारी सहायता करता है। ध्यान के माध्यम से भी स्वयं को बेहतर बनाना सबसे अच्छा तरीका है। ध्यान हमारे मन को सब कुछ भूलने और केवल स्वयं पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है। शांतिपूर्ण आत्मविश्लेषण के द्वारा अपने बारे में बहुत कुछ समझने में मदद मिलती है। कई बार हम दूसरों को बहुत महत्व देते हैं, अतः हमको दूसरों के बारे में सोचना छोड़कर स्वयं पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। हम स्वयं को बेहतर बनाने के लिए अपने महत्व को समझें। अपनी इच्छाओं को प्राथमिकता दें

और अपने लक्ष्यों और इरादों का सम्मान करें। दुनिया भर से निर्देश लेने की बजाय, हम स्वयं के सबसे बड़े निर्देशक बन सकते हैं। हम स्वयं के आलोचक बनकर स्वयं को सही सलाह दे सकते हैं कि क्या करना है और कैसे करना है।

वह व्यक्ति जो स्वयं अपनी गलतियों और कमजोरियों को जानता है वह अपने में अच्छे से सुधार कर सकता है। जब लोग हमें चोट पहुंचाते हैं तो अक्सर हमारे अंदर नकारात्मक भावनाएं आने लगती हैं और हम सच में स्वयं के बारे में भूल जाते हैं। इस तरह के लोगों पर अपना समय बर्बाद करने की बजाय उन्हें माफ कर अपने जीवन में आगे बढ़ें। हम स्वयं पर ध्यान लगाएं और जीवन में सकारात्मक रहें।



योग दिवस पर कार्यालय के कार्मिक योग अभ्यास करते हुए

ओणम के अवसर पर सम्मिलित सभी अधिकारी एवं कर्मचारी



कार्यालय में ओणम के अवसर पर रंगोली की सजावट

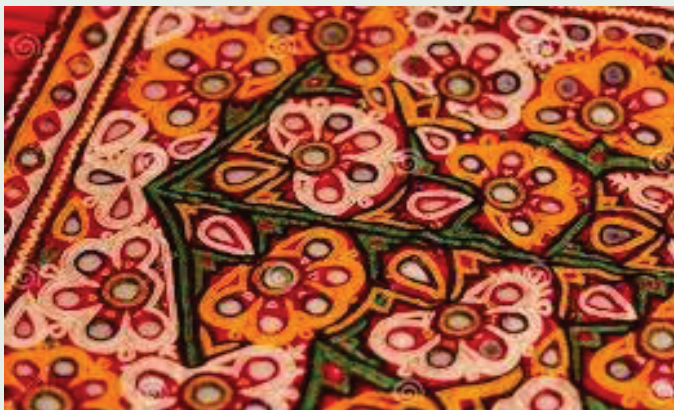


कार्यालय में ओणम के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए प्रधान महालेखाकार



पोत का कारचोबी

पोत का कारचोबी गुजराती क्राफ्टिंग का एक अभिन्न हिस्सा है। गुजरात मनके शिल्प के मूल में है। इसे 'मोती भारत' के रूप में जाना जाता है, दूसरे शब्दों में 'बीड इंडिया।' इस कलाकृति का मूल गुजरात के दो जिले सौराष्ट्र और खंभात हैं। मनका शिल्प मोतियों के साथ पारंपरिक सजावटी उत्पाद बनाने की कला है। भारत के सबसे पुराने शिल्पों में गिना जाता है, इसकी हमेशा मांग रही है। इस कलाकृति में एक दीवार का टुकड़ा, कुशन कवर, प्लेट कवर, जग कवर, फूलदान, टेबल मैट और कई और सामान शामिल हैं। मनके शिल्प को बनाने के लिए नायलॉन के धागे का काफी उपयोग किया जाता है। मोतियों को ठीक से पकड़ने के लिए नायलॉन का धागा काफी मजबूत होता है। इसके अलावा, यह शिल्प उत्पादों को बनाने में दो या तीन मोतियों को एक साथ मिलाने की तकनीक का उपयोग करता है।



कच्छ कढ़ाई हस्तशिल्प

कच्छ कढ़ाई भारत के गुजरात के कच्छ जिले के आदिवासी समुदाय की हस्तशिल्प एवं कपड़ा हस्ताक्षर कला परंपरा है । अपनी समृद्ध डिज़ाइन के साथ इस कढ़ाई ने भारतीय कढ़ाई परंपरा में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है । आम तौर पर महिलाओं द्वारा की जाने वाली कढ़ाई सूती कपड़ों पर, सूती या रेशमी धागों का उपयोग करके जाल के रूप में तैयार की जाती है । इसमें टांको के प्रकार स्क्वायर चैन, डबल बटनहोल, पैटर्न डारिंग, रनिंग स्टिच, शैतान और स्ट्रेट स्टिच है । कच्छ कढ़ाई का इतिहास 16वीं एवं 17वीं शताब्दी का है जब लोग अफगानिस्तान, ग्रीस, जर्मनी, ईरान और इराक जैसे देशों से गुजरात में आकर बसे थे । यह कला कच्छ की महिलाओं के लिए न केवल अपने कपड़ों की आवश्यकता को पूरा करने करने बल्कि कच्छ की गंभीर शुष्क एवं गर्म परिस्थितियों को देखते हुए जीविकोपार्जन का व्यवसाय बन गया ।